



Mr.Nikhil jain

21 Feb 1997

09:30 PM

Morena

Model: Web-KundliPhal

Order No: 119886401

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 21/02/1997
दिन _____: शुक्रवार
जन्म समय _____: 21:30:00 घंटे
इष्ट _____: 36:42:02 घटी
स्थान _____: Morena
राज्य _____: Madhya Pradesh
देश _____: India

अक्षांश _____: 26:30:00 उत्तर
रेखांश _____: 78:04:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: -00:17:44 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 21:12:16 घंटे
वेलान्तर _____: -00:13:40 घंटे
साम्पातिक काल _____: 07:18:42 घंटे
सूर्योदय _____: 06:49:11 घंटे
सूर्यास्त _____: 18:13:53 घंटे
दिनमान _____: 11:24:42 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: उत्तरायण
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: वसन्त
सूर्य के अंश _____: 09:15:12 कुम्भ
लग्न के अंश _____: 23:46:11 कन्या

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: कन्या - बुध
राशि-स्वामी _____: सिंह - सूर्य
नक्षत्र-चरण _____: मघा - 1
नक्षत्र स्वामी _____: केतु
योग _____: अतिगण्ड
करण _____: विष्टि
गण _____: राक्षस
योनि _____: मूषक
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: क्षत्रिय
वश्य _____: वनचर
वर्ग _____: मूषक
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: अग्नि
जन्म नामाक्षर _____: मा-माणिक
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - रजत
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: मीन

पंचांग

दादा का नाम _____ :
पिता का नाम _____ :
माता का नाम _____ :
जाति _____ :
गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1918	फाल्गुन	2
पंजाबी	संवत : 2053	फाल्गुन	10
बंगाली	सन् : 1403	फाल्गुन	9
तमिल	संवत : 2053	मासी	10
केरल	कोल्लम : 1172	कुंभम	9
नेपाली	संवत : 2053	फाल्गुन	10
चैत्रादि	संवत : 2053	माघ	शुक्ल 14
कार्तिकादि	संवत : 2053	माघ	शुक्ल 14

पंचांग

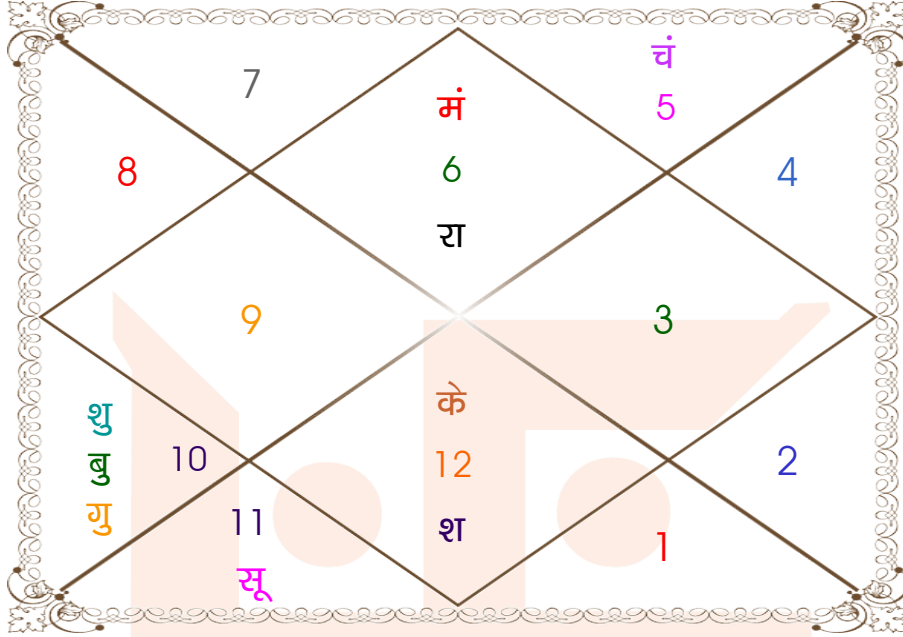
सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 14
तिथि समाप्ति काल _____ : 13:18:23
जन्म तिथि _____ : 15
सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : आश्लेषा
नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 19:34:49 घंटे
जन्म योग _____ : मघा
सूर्योदय कालीन योग _____ : शोभन
योग समाप्ति काल _____ : 14:53:30 घंटे
जन्म योग _____ : अतिगण्ड
सूर्योदय कालीन करण _____ : वणिज
करण समाप्ति काल _____ : 13:18:23 घंटे
जन्म करण _____ : विष्टि
भयात _____ : 04:47:58
भभोग _____ : 67:41:42
भोग्य दशा काल _____ : केतु 6 वर्ष 6 मा 1 दि

घात चक्र

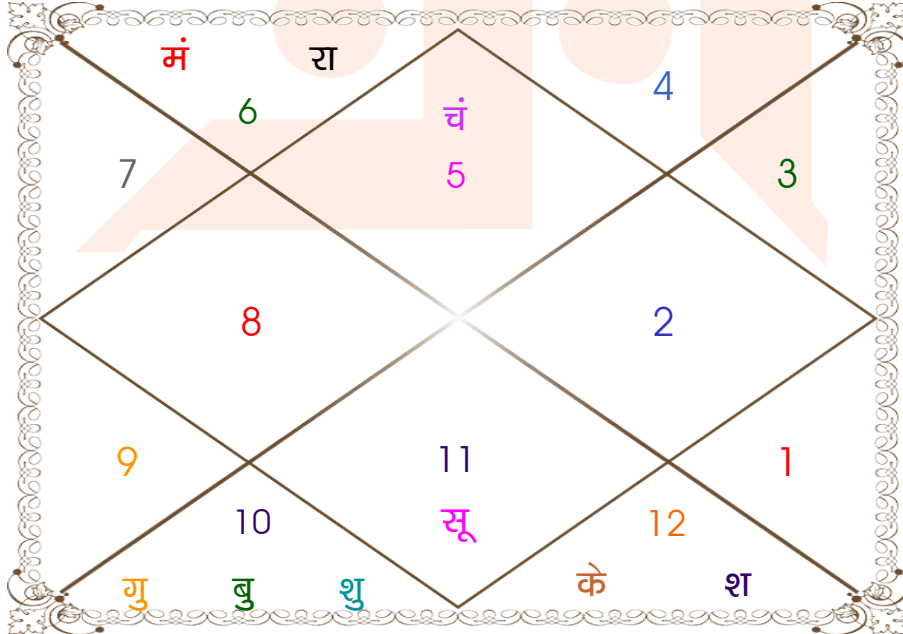
मास _____ : ज्येष्ठ
तिथि _____ : 3-8-13
दिन _____ : शनिवार
नक्षत्र _____ : मूल
योग _____ : धृति
करण _____ : बव
प्रहर _____ : 1
वर्ग _____ : मार्जार
लग्न _____ : मीन
सूर्य _____ : धनु
चन्द्र _____ : मकर
मंगल _____ : मकर
बुध _____ : तुला
गुरु _____ : कुम्भ
शुक्र _____ : मीन
शनि _____ : वृश्चिक
राहु _____ : मेष

जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

के श			
सू			
शु बु गु			चं
			रा ल मं

लग्न कुंडली

		के श	
		सू	
		शु बु गु	
चं	ल मं		

विंशोत्तरी
केतु 6वर्ष 6मा 1दि
केतु

21/02/1997

25/08/2116

केतु	25/08/2003
शुक्र	25/08/2023
सूर्य	24/08/2029
चन्द्र	25/08/2039
मंगल	25/08/2046
राहु	24/08/2064
गुरु	24/08/2080
शनि	25/08/2099
बुध	25/08/2116

योगिनी
भद्रिका 4वर्ष 7मा 22दि
धान्या

15/10/2025

15/10/2028

धान्या	14/01/2026
भामरी	16/05/2026
भद्रिका	15/10/2026
उल्का	16/04/2027
सिद्धा	15/11/2027
संकटा	16/07/2028
मंगला	15/08/2028
पिंगला	15/10/2028

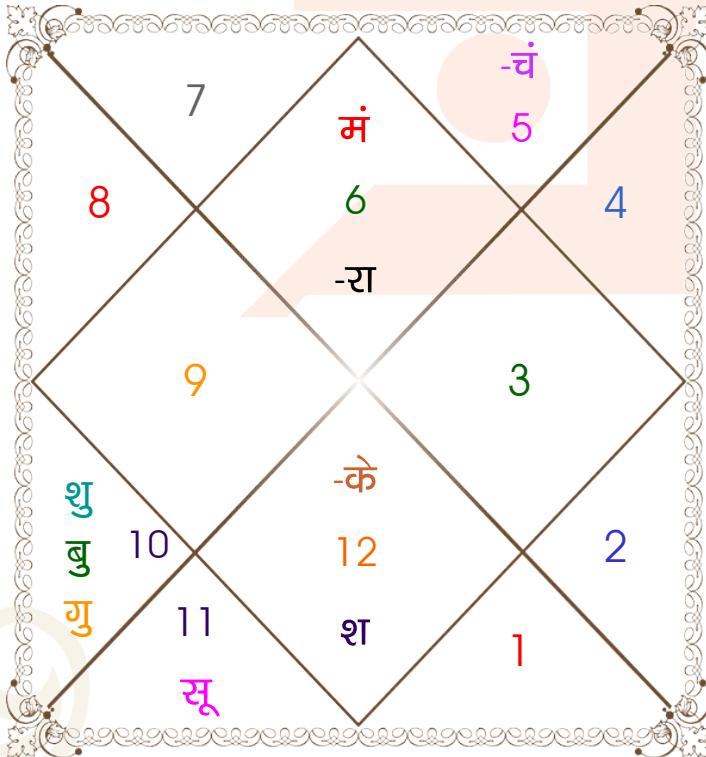
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			कन्या	23:46:11	320:58:27	चित्रा	1	14	बुध	मंगल	मंगल	---
सूर्य			कुंभ	09:15:12	01:00:25	शतभिषा	1	24	शनि	राहु	गुरु	शत्रु राशि
चंद्र			सिंह	00:56:43	11:49:07	मघा	1	10	सूर्य	केतु	शुक्र	मित्र राशि
मंगल	व		कन्या	10:32:09	00:12:04	हस्त	1	13	बुध	चंद्र	चंद्र	शत्रु राशि
बुध		अ	मक	25:15:06	01:37:49	धनिष्ठा	1	23	शनि	मंगल	राहु	सम राशि
गुरु			मक	13:21:54	00:13:26	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	राहु	नीच राशि
शुक्र			मक	29:18:32	01:15:00	धनिष्ठा	2	23	शनि	मंगल	शनि	मित्र राशि
शनि			मीन	11:55:15	00:06:44	उ०भाद्रपद	3	26	गुरु	शनि	चंद्र	सम राशि
राहु	व		कन्या	05:00:13	00:03:45	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	शनि	मूलत्रिकोण
केतु	व		मीन	05:00:13	00:03:45	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	मूलत्रिकोण
हर्ष			मक	12:24:47	00:03:14	श्रवण	1	22	शनि	चंद्र	राहु	---
नेप			मक	04:54:14	00:01:58	उत्तराषाढ़ा	3	21	शनि	सूर्य	शनि	---
प्लूटो			वृश्चि	11:43:13	00:00:31	अनुराधा	3	17	मंगल	शनि	चंद्र	---
दशम भाव			मिथु	24:20:44	--	पुनर्वसु	--	7	बुध	गुरु	बुध	--

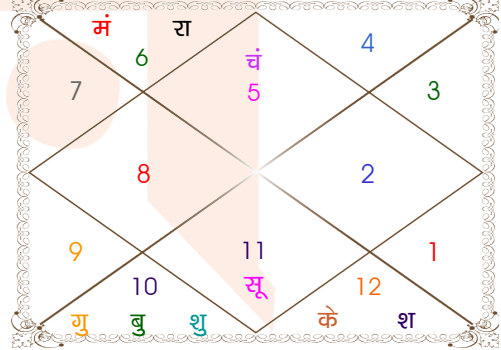
व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:49:03

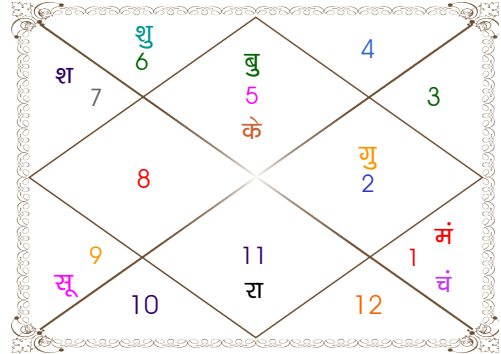
लग्न-चलित



चन्द्र कुंडली



नवमांश कुंडली



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	कन्या 08:51:57	कन्या 23:46:11
2	तुला 08:51:57	तुला 23:57:42
3	वृश्चिक 09:03:28	वृश्चिक 24:09:13
4	धनु 09:14:58	धनु 24:20:44
5	मकर 09:14:58	मकर 24:09:13
6	कुम्भ 09:03:28	कुम्भ 23:57:42
7	मीन 08:51:57	मीन 23:46:11
8	मेष 08:51:57	मेष 23:57:42
9	वृष 09:03:28	वृष 24:09:13
10	मिथुन 09:14:58	मिथुन 24:20:44
11	कर्क 09:14:58	कर्क 24:09:13
12	सिंह 09:03:28	सिंह 23:57:42

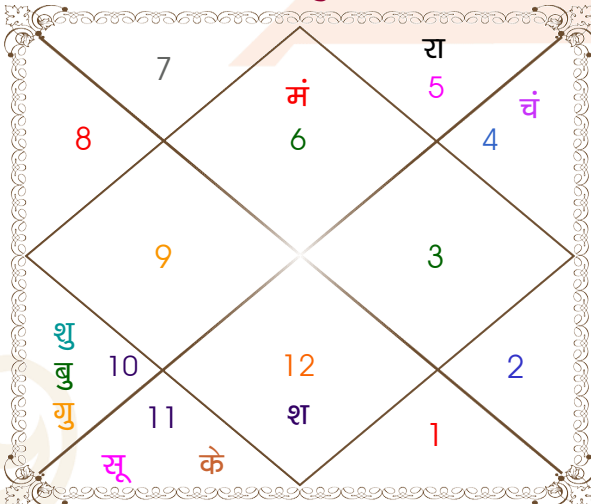
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	कन्या	23:46:11
2	तुला	22:34:31
3	वृश्चिक	22:58:13
4	धनु	24:20:44
5	मकर	25:58:59
6	कुम्भ	26:21:28
7	मीन	23:46:11
8	मेष	22:34:31
9	वृष	22:58:13
10	मिथुन	24:20:44
11	कर्क	25:58:59
12	सिंह	26:21:28

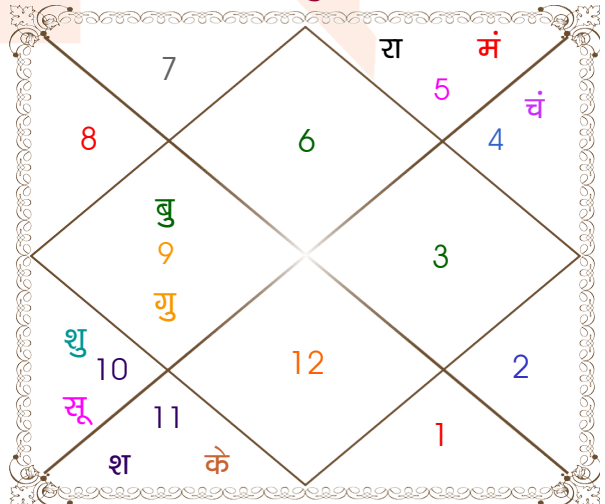
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

चलित कुंडली



भाव कुंडली



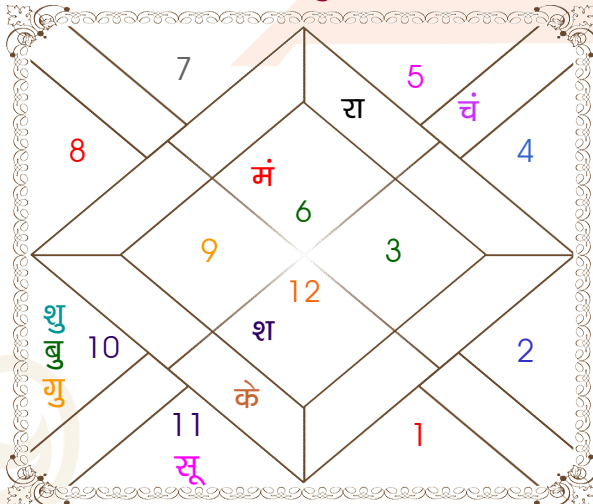
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----	
	चर	स्थिर	बालादि दीप्तादि शयनादि रश्मि ग्रह बल
सूर्य	ज्ञाति	पितृ	कुमार खल प्रकाश 6.63 65 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	बाल मुदित निद्रा 4.60 56 %
मंगल	पुत्र	भातृ	वृद्ध खल प्रकाश 0.47 57 %
बुध	अमात्य	ज्ञाति	बाल विकल आगम 0.00 66 %
गुरु	भातृ	धन	युवा भीत उपवेशन 0.39 43 %
शुक्र	आत्मा	कलत्र	बाल मुदित नृत्यलिप्सा 7.25 66 %
शनि	मातृ	आयु	वृद्ध शान्त निद्रा 1.27 51 %
राहु	---	ज्ञान	मृत स्वस्थ प्रकाश 0.00 0 %
केतु	---	मोक्ष	मृत स्वस्थ प्रकाश 0.00 25 %
कुल			20.61

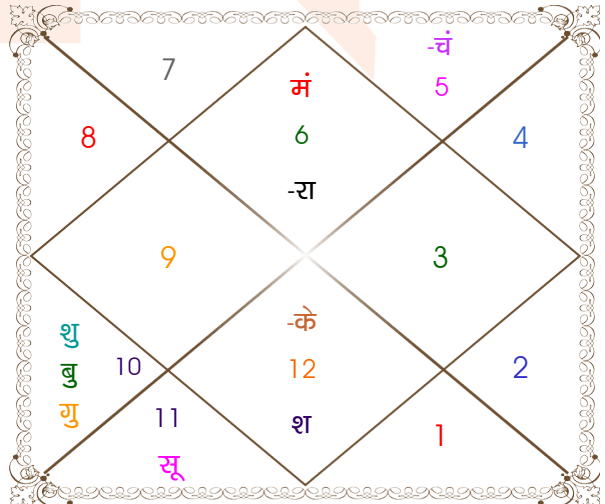
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा
मूल	पूर्वाषाढा	उत्तराषाढा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती
अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा

चलित कुंडली



लग्न-चलित



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : केतु 6 वर्ष 6 मास 1 दिन

केतु 7 वर्ष	शुक्र 20 वर्ष	सूर्य 6 वर्ष	चंद्र 10 वर्ष	मंगल 7 वर्ष
21/02/1997	25/08/2003	25/08/2023	24/08/2029	25/08/2039
25/08/2003	25/08/2023	24/08/2029	25/08/2039	25/08/2046
21/02/1997	शुक्र 24/12/2006	सूर्य 12/12/2023	चंद्र 25/06/2030	मंगल 21/01/2040
शुक्र 22/03/1998	सूर्य 25/12/2007	चंद्र 12/06/2024	मंगल 24/01/2031	राहु 08/02/2041
सूर्य 28/07/1998	चंद्र 24/08/2009	मंगल 18/10/2024	राहु 25/07/2032	गुरु 14/01/2042
चंद्र 26/02/1999	मंगल 24/10/2010	राहु 12/09/2025	गुरु 24/11/2033	शनि 23/02/2043
मंगल 25/07/1999	राहु 24/10/2013	गुरु 01/07/2026	शनि 25/06/2035	बुध 20/02/2044
राहु 12/08/2000	गुरु 24/06/2016	शनि 13/06/2027	बुध 23/11/2036	केतु 19/07/2044
गुरु 19/07/2001	शनि 25/08/2019	बुध 18/04/2028	केतु 24/06/2037	शुक्र 18/09/2045
शनि 28/08/2002	बुध 25/06/2022	केतु 24/08/2028	शुक्र 23/02/2039	सूर्य 24/01/2046
बुध 25/08/2003	केतु 25/08/2023	शुक्र 24/08/2029	सूर्य 25/08/2039	चंद्र 25/08/2046

राहु 18 वर्ष	गुरु 16 वर्ष	शनि 19 वर्ष	बुध 17 वर्ष	केतु 7 वर्ष
25/08/2046	24/08/2064	24/08/2080	25/08/2099	25/08/2116
24/08/2064	24/08/2080	25/08/2099	25/08/2116	00/00/0000
राहु 07/05/2049	गुरु 12/10/2066	शनि 28/08/2083	बुध 22/01/2102	केतु 21/01/2117
गुरु 30/09/2051	शनि 25/04/2069	बुध 07/05/2086	केतु 19/01/2103	शुक्र 22/02/2117
शनि 06/08/2054	बुध 01/08/2071	केतु 16/06/2087	शुक्र 19/11/2105	00/00/0000
बुध 23/02/2057	केतु 06/07/2072	शुक्र 15/08/2090	सूर्य 25/09/2106	00/00/0000
केतु 13/03/2058	शुक्र 07/03/2075	सूर्य 28/07/2091	चंद्र 24/02/2108	00/00/0000
शुक्र 13/03/2061	सूर्य 25/12/2075	चंद्र 26/02/2093	मंगल 21/02/2109	00/00/0000
सूर्य 05/02/2062	चंद्र 25/04/2077	मंगल 07/04/2094	राहु 10/09/2111	00/00/0000
चंद्र 07/08/2063	मंगल 01/04/2078	राहु 11/02/2097	गुरु 16/12/2113	00/00/0000
मंगल 24/08/2064	राहु 24/08/2080	गुरु 25/08/2099	शनि 25/08/2116	00/00/0000

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशों के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल केतु 6 वर्ष 6 मा 1 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - गुरु 12/09/2025 01/07/2026	सूर्य - शनि 01/07/2026 13/06/2027	सूर्य - बुध 13/06/2027 18/04/2028	सूर्य - केतु 18/04/2028 24/08/2028	सूर्य - शुक्र 24/08/2028 24/08/2029
गुरु 21/10/2025 शनि 06/12/2025 बुध 16/01/2026 केतु 02/02/2026 शुक्र 23/03/2026 सूर्य 07/04/2026 चंद्र 01/05/2026 मंगल 18/05/2026 राहु 01/07/2026	शनि 25/08/2026 बुध 13/10/2026 केतु 02/11/2026 शुक्र 30/12/2026 सूर्य 16/01/2027 चंद्र 14/02/2027 मंगल 06/03/2027 राहु 28/04/2027 गुरु 13/06/2027	बुध 27/07/2027 केतु 14/08/2027 शुक्र 05/10/2027 सूर्य 20/10/2027 चंद्र 15/11/2027 मंगल 03/12/2027 राहु 19/01/2028 गुरु 29/02/2028 शनि 18/04/2028	केतु 26/04/2028 शुक्र 17/05/2028 सूर्य 23/05/2028 चंद्र 03/06/2028 मंगल 11/06/2028 राहु 30/06/2028 गुरु 17/07/2028 शनि 06/08/2028 बुध 24/08/2028	शुक्र 24/10/2028 सूर्य 11/11/2028 चंद्र 12/12/2028 मंगल 02/01/2029 राहु 26/02/2029 गुरु 15/04/2029 शनि 12/06/2029 बुध 03/08/2029 केतु 24/08/2029
चंद्र - चंद्र 24/08/2029 25/06/2030	चंद्र - मंगल 25/06/2030 24/01/2031	चंद्र - राहु 24/01/2031 25/07/2032	चंद्र - गुरु 25/07/2032 24/11/2033	चंद्र - शनि 24/11/2033 25/06/2035
चंद्र 19/09/2029 मंगल 06/10/2029 राहु 21/11/2029 गुरु 01/01/2030 शनि 18/02/2030 बुध 02/04/2030 केतु 20/04/2030 शुक्र 10/06/2030 सूर्य 25/06/2030	मंगल 07/07/2030 राहु 08/08/2030 गुरु 06/09/2030 शनि 09/10/2030 बुध 08/11/2030 केतु 21/11/2030 शुक्र 26/12/2030 सूर्य 06/01/2031 चंद्र 24/01/2031	राहु 16/04/2031 गुरु 28/06/2031 शनि 23/09/2031 बुध 09/12/2031 केतु 10/01/2032 शुक्र 11/04/2032 सूर्य 08/05/2032 चंद्र 23/06/2032 मंगल 25/07/2032	गुरु 28/09/2032 शनि 14/12/2032 बुध 21/02/2033 केतु 21/03/2033 शुक्र 10/06/2033 सूर्य 05/07/2033 चंद्र 14/08/2033 मंगल 12/09/2033 राहु 24/11/2033	शनि 23/02/2034 बुध 16/05/2034 केतु 19/06/2034 शुक्र 23/09/2034 सूर्य 22/10/2034 चंद्र 09/12/2034 मंगल 12/01/2035 राहु 09/04/2035 गुरु 25/06/2035
चंद्र - बुध 25/06/2035 23/11/2036	चंद्र - केतु 23/11/2036 24/06/2037	चंद्र - शुक्र 24/06/2037 23/02/2039	चंद्र - सूर्य 23/02/2039 25/08/2039	मंगल - मंगल 25/08/2039 21/01/2040
बुध 06/09/2035 केतु 06/10/2035 शुक्र 01/01/2036 सूर्य 27/01/2036 चंद्र 10/03/2036 मंगल 09/04/2036 राहु 26/06/2036 गुरु 02/09/2036 शनि 23/11/2036	केतु 06/12/2036 शुक्र 10/01/2037 सूर्य 21/01/2037 चंद्र 08/02/2037 मंगल 20/02/2037 राहु 24/03/2037 गुरु 22/04/2037 शनि 25/05/2037 बुध 24/06/2037	शुक्र 04/10/2037 सूर्य 03/11/2037 चंद्र 24/12/2037 मंगल 29/01/2038 राहु 30/04/2038 गुरु 20/07/2038 शनि 24/10/2038 बुध 19/01/2039 केतु 23/02/2039	सूर्य 04/03/2039 चंद्र 20/03/2039 मंगल 30/03/2039 राहु 27/04/2039 गुरु 21/05/2039 शनि 19/06/2039 बुध 15/07/2039 केतु 25/07/2039 शुक्र 25/08/2039	मंगल 03/09/2039 राहु 25/09/2039 गुरु 15/10/2039 शनि 07/11/2039 बुध 29/11/2039 केतु 07/12/2039 शुक्र 01/01/2040 सूर्य 09/01/2040 चंद्र 21/01/2040

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

मंगल - राहु 21/01/2040 08/02/2041	मंगल - गुरु 08/02/2041 14/01/2042	मंगल - शनि 14/01/2042 23/02/2043	मंगल - बुध 23/02/2043 20/02/2044	मंगल - केतु 20/02/2044 19/07/2044
राहु 19/03/2040 गुरु 09/05/2040 शनि 08/07/2040 बुध 01/09/2040 केतु 23/09/2040 शुक्र 26/11/2040 सूर्य 15/12/2040 चंद्र 16/01/2041 मंगल 08/02/2041	गुरु 25/03/2041 शनि 18/05/2041 बुध 05/07/2041 केतु 25/07/2041 शुक्र 20/09/2041 सूर्य 07/10/2041 चंद्र 04/11/2041 मंगल 24/11/2041 राहु 14/01/2042	शनि 20/03/2042 बुध 16/05/2042 केतु 08/06/2042 शुक्र 15/08/2042 सूर्य 04/09/2042 चंद्र 08/10/2042 मंगल 01/11/2042 राहु 31/12/2042 गुरु 23/02/2043	बुध 16/04/2043 केतु 07/05/2043 शुक्र 06/07/2043 सूर्य 24/07/2043 चंद्र 23/08/2043 मंगल 13/09/2043 राहु 07/11/2043 गुरु 25/12/2043 शनि 20/02/2044	केतु 29/02/2044 शुक्र 25/03/2044 सूर्य 01/04/2044 चंद्र 14/04/2044 मंगल 23/04/2044 राहु 15/05/2044 गुरु 04/06/2044 शनि 27/06/2044 बुध 19/07/2044
मंगल - शुक्र 19/07/2044 18/09/2045	मंगल - सूर्य 18/09/2045 24/01/2046	मंगल - चंद्र 24/01/2046 25/08/2046	राहु - राहु 25/08/2046 07/05/2049	राहु - गुरु 07/05/2049 30/09/2051
शुक्र 28/09/2044 सूर्य 19/10/2044 चंद्र 23/11/2044 मंगल 18/12/2044 राहु 20/02/2045 गुरु 18/04/2045 शनि 24/06/2045 बुध 24/08/2045 केतु 18/09/2045	सूर्य 24/09/2045 चंद्र 05/10/2045 मंगल 12/10/2045 राहु 31/10/2045 गुरु 17/11/2045 शनि 08/12/2045 बुध 26/12/2045 केतु 02/01/2046 शुक्र 24/01/2046	चंद्र 10/02/2046 मंगल 23/02/2046 राहु 27/03/2046 गुरु 24/04/2046 शनि 28/05/2046 बुध 27/06/2046 केतु 09/07/2046 शुक्र 14/08/2046 सूर्य 25/08/2046	राहु 20/01/2047 गुरु 31/05/2047 शनि 03/11/2047 बुध 22/03/2048 केतु 18/05/2048 शुक्र 30/10/2048 सूर्य 18/12/2048 चंद्र 10/03/2049 मंगल 07/05/2049	गुरु 01/09/2049 शनि 17/01/2050 बुध 22/05/2050 केतु 12/07/2050 शुक्र 05/12/2050 सूर्य 18/01/2051 चंद्र 01/04/2051 मंगल 22/05/2051 राहु 30/09/2051
राहु - शनि 30/09/2051 06/08/2054	राहु - बुध 06/08/2054 23/02/2057	राहु - केतु 23/02/2057 13/03/2058	राहु - शुक्र 13/03/2058 13/03/2061	राहु - सूर्य 13/03/2061 05/02/2062
शनि 13/03/2052 बुध 08/08/2052 केतु 07/10/2052 शुक्र 30/03/2053 सूर्य 21/05/2053 चंद्र 16/08/2053 मंगल 15/10/2053 राहु 21/03/2054 गुरु 06/08/2054	बुध 16/12/2054 केतु 09/02/2055 शुक्र 14/07/2055 सूर्य 29/08/2055 चंद्र 15/11/2055 मंगल 08/01/2056 राहु 27/05/2056 गुरु 28/09/2056 शनि 23/02/2057	केतु 17/03/2057 शुक्र 20/05/2057 सूर्य 08/06/2057 चंद्र 10/07/2057 मंगल 02/08/2057 राहु 28/09/2057 गुरु 18/11/2057 शनि 18/01/2058 बुध 13/03/2058	शुक्र 12/09/2058 सूर्य 06/11/2058 चंद्र 05/02/2059 मंगल 10/04/2059 राहु 21/09/2059 गुरु 14/02/2060 शनि 06/08/2060 बुध 08/01/2061 केतु 13/03/2061	सूर्य 29/03/2061 चंद्र 26/04/2061 मंगल 15/05/2061 राहु 03/07/2061 गुरु 16/08/2061 शनि 07/10/2061 बुध 23/11/2061 केतु 12/12/2061 शुक्र 05/02/2062

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

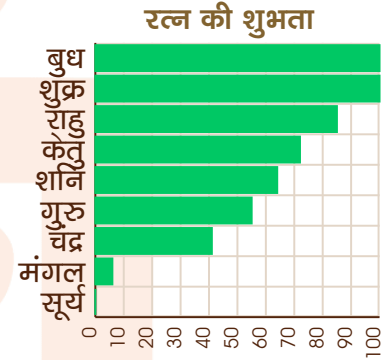
मूलांक	3
भाग्यांक	4
मित्र अंक	3, 5, 7, 9, 4
शत्रु अंक	1, 8
शुभ वर्ष	21,30,39,48,57
शुभ दिन	बुध, शुक्र
शुभ ग्रह	बुध, शुक्र
मित्र राशि	वृश्चिक, मेष
मित्र लग्न	धनु, वृष, कर्क
अनुकूल देवता	सूर्य
शुभ रत्न	पन्ना
शुभ उपरत्न	संगपन्ना, मरगज
भाग्य रत्न	हीरा
शुभ धातु	कांसा
शुभ रंग	हरित
शुभ दिशा	उत्तर
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	हाथी दाँत, कपूर, फल
दान अन्न	मूँग
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
पन्ना	बुध	100%	सन्तति सुख, व्यावसायिक उन्नति, स्वास्थ्य
हीरा	शुक्र	100%	सन्तति सुख, भाग्योदय, धन
गोमेद	राहु	85%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	72%	दम्पति, सन्तति सुख
नीलम	शनि	64%	दम्पति, सन्तति सुख, शत्रु व रोग मुक्ति
पुखराज	गुरु	55%	सन्तति सुख, सुख, दम्पति
मोती	चंद्र	41%	व्यय, हानि
मूंगा	मंगल	6%	रोग, दुर्घटना, पराक्रम हानि
माणिक्य	सूर्य	0%	शत्रु व रोग, व्यय



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
केतु	25/08/2003	0%	16%	19%	100%	55%	100%	52%	72%	85%
शुक्र	25/08/2023	0%	16%	6%	100%	55%	100%	70%	91%	78%
सूर्य	24/08/2029	0%	52%	19%	100%	61%	89%	52%	72%	60%
चंद्र	25/08/2039	0%	58%	6%	100%	55%	100%	64%	72%	60%
मंगल	25/08/2046	0%	52%	31%	100%	61%	100%	64%	72%	78%
राहु	24/08/2064	0%	16%	0%	100%	55%	100%	70%	97%	60%
गुरु	24/08/2080	0%	52%	19%	100%	67%	89%	64%	85%	72%
शनि	25/08/2099	0%	16%	0%	100%	55%	100%	77%	91%	60%
बुध	25/08/2116	0%	16%	6%	100%	55%	100%	64%	85%	72%

विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए पन्ना, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

पन्ना आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

हीरा आपका भाग्य रत्न है। इस रत्न को धारण करने से आपके भाग्य की वृद्धि होगी। रुके हुए कार्य सुगमता पूर्वक बनेंगे। मान-सम्मान बढ़ेगा। शुभ यात्राएं होंगी। मानसिक विकार दूर होंगे। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

गोमेद आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए लहसुनिया, नीलम एवं पुखराज रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

मोती रत्न आपके लिए नेष्ट है। अतः इसे न पहनना ही बेहतर है। इसे धारण करने से आपको मानसिक परेशानी एवं स्वास्थ्य हानि हो सकती है। अतः यदि इसे धारण करना हो तो इसकी अनुकूलता का परीक्षण अवश्य कर लें और विभिन्न दशाओं में इसकी अनुकूलता का परीक्षण करते रहें, क्योंकि यह रत्न आपके लिए किसी दशा या गोचर में विशेष कष्टकारी भी हो सकता है।

मूंगा व माणिक्य रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से

विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध पंचम भाव में स्थित है। आपको बुध रत्न पन्ना धारण करना चाहिए। पन्ना रत्न आपको प्रसन्नचित्त, कुशाग्रबुद्धि और बुद्धिमान व्यक्ति बनेंगे। रत्न की शुभता से वाद विवाद में कुशल, तर्ककुशल और मधुरभाषी बनेंगे। यह रत्न आपको सदाचारी, धैर्यशील, चरित्रवान और संतोषी बनाएगा। रत्न धारण करने के बाद आप अपनी बुद्धि से धनार्जन करेंगे। यह रत्न आपको अपनी व्यवसायिक बुद्धि और विद्या के कारण एक सुखद जीवन व्यतीत करने में सहयोग करेगा। रत्न प्रभाव आपको लोभ भावना से बचायेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में बुध लग्नेश एवं दशमेश है। लग्नेश बुध की शुभता प्राप्ति के लिए आप पन्ना रत्न धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न आपको बौद्धिक क्षेत्रों से संबंधित कार्यक्षेत्र दे सकता है। रत्न शुभता से आपको आजीविका क्षेत्र में सुख-सम्मान की प्राप्ति हो सकती है। लग्नेश बुध रत्न आपकी विवेक योग्यता को बढ़ाएगा। पन्ने की शुभता से आप में व्यापारिक बुद्धि, लेखन योग्यता का विकास कर सकता है। पन्ना रत्न लग्नेश का रत्न होने के कारण अपनी शुभता से आपको स्वास्थ्य सुख भी प्रदान करेगा। जीवन को आरोग्य रखने में भी पन्ना रत्न आपके लिए शुभ फलदायी रत्न है। पन्ना रत्न आपको गणितीय कौशल भी देगा।

पन्ना रत्न कनिष्ठिका अंगूली में धारण करना चाहिए। इस रत्न को सोना धातु में जड़वाकर आप प्रातःकाल में स्नानादि नित्यक्रियाओं से निवृत्त होने के बाद रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर धूप, दीप और फूल दिखाकर धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करते समय बुध मंत्र ॐ बुं बुधाय नमः का १ माला या ५ माला जाप करना चाहिए। तदुपरांत बुध ग्रह की वस्तुएं जैसे - मूंग, कस्तूरी, कांसा, हरित वस्त्र आदि का यथाशक्ति दान करना चाहिए। रत्न इस प्रकार धारण करें कि वह शरीर को स्पर्श करें। पन्ना रत्न ३ रत्ती का कम से कम, अन्यथा ६ रत्ती का होना चाहिए।

इस रत्न को आप लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या विपरीत हाथ में भी धारण कर सकते हैं। पन्ना रत्न धारण करने में आप असमर्थ हो तो आप इसके स्थान पर मरगज, हरा हकीक, पेरिडोट एवं ४ मुखी रुद्राक्ष धारण कर सकते हैं।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र पंचम भाव में स्थित है। शुक्र रत्न हीरा आपके लिए शुभ फलदायी रहेगा। आपको शुक्र रत्न हीरा धारण करना चाहिए। हीरा रत्न आपको कविताओं, ललितकलाओं और लेखन में गहरी रुचि देगा। संगत, कला और सौंदर्य सम्पन्न और सद्गुणी

बनाएगा। आप आस्तिक और उदार व्यक्ति बनेंगे। हीरे रत्न प्रभाव से आप विद्वान, प्रतिभाशाली और अच्छे वक्ता सिद्ध होंगे। इस रत्न की शुभता से आप राजनीतिज्ञ मंत्री या न्यायाधीश भी हो सकते हैं। साथ ही यह रत्न वाहनों का सुख, उत्तम व विश्वसनीय मित्र देगा। संतान सुख के पक्ष से भी यह रत्न शुभदायक रहेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीय और नवम भाव के स्वामी है। लग्नेश बुध के मित्र व त्रिकोण भाव के स्वामी होने के कारण आपके लिए विशेष शुभ हो गए हैं। शुक्र की शुभता में बढ़ोतरी करने के लिए आप शुक्र रत्न हीरा धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न आपके लिए धन-धान्य, कुटुंब सुख, संचित धन एवं यश प्रदायक सिद्ध हो सकता है। भाग्य, धर्म व दूर स्थानों की यात्रा के लिए भी आप शुक्र रत्न हीरा अवश्य धारण करें। यह रत्न आपका भाग्योदय करेगा। हीरा रत्न धारण से आपकी उन्नति सहज हो सकती है।

हीरा रत्न सोने धातु की अंगूठी में जड़वाकर, शुक्रवार के दिन सूर्य उदय के पश्चात स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर रत्न को रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से मिलकर बने पंचामृत में डूबोकर शुद्ध कर, अपने देव स्थान पर रखकर शुक्रदेव और रत्न को धूप, दीप एवं फूल दिखाकर अनामिका अंगूली में धारण करें। हीरा रत्न धारण करते समय शुक्र मंत्र ॐ शं शुक्राय नमः का १०८ बार मंत्र जाप करना चाहिए। मंत्र जाप करने के बाद शुक्र ग्रह की वस्तुएं जैसे- चावल, चांदी, घी, श्वेत वस्त्र आदि वस्तुओं का दान करें। हीरा रत्न से अधिक बजन का धारण करना चाहिए। यह छोटे टुकड़ों में भी पहना जा सकता है।

हीरा रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा एवं पुखराज रत्न धारण करना सर्वदा वर्जित है। अंगूठी रूप रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। हीरा रत्न के स्थान पर इस रत्न के उपरत्न ओपल, जर्कन, स्फटिक एवं ६ मुखी रुद्राक्ष धारण किया जा सकता है।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु लग्न भाव में स्थित है। अतः आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न गोमेद आपको मनस्वी एवं साहसी बनाएगा तथा रत्न आपके चातुर्य योग्यता को बढ़ायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आपको विवाद में विजय, अध्ययनशीलता एवं कार्यकुशलता कौशल की प्राप्ति होगी। लग्न भाव से राहु सप्तम को देख रहे हैं जिसके कारण गोमेद रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय हो सकता है। इस रत्न को धारण करने से आप भ्रम मुक्त जीवन का आनंद लेंगे।

राहु कन्या राशि में स्थित है व इसका स्वामी बुध पंचम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपको शिक्षा क्षेत्र में विशेष सम्मान, पद और सफलता प्राप्त होगी। रत्न शुभता आपको अधिकार शक्ति प्रदान करेगी। आप शिक्षा क्षेत्र या मनोरंजन क्षेत्र में अपनी विशेष योग्यता दिखा पाएंगे। इस रत्न को धारण करने से आप धन-संपत्ति का संचय करने में सफल होंगे। अध्ययन कार्यों में आपका आत्मविश्वास बढ़ा-चढ़ा रहेगा। एवं यह रत्न आपके संतान सुख को बढ़ाएगा। आपको कम परिश्रम करने पर भी अधिक लाभ देगा। विद्याध्ययन में आपकी रुचि जागृत होगी तथा धार्मिक क्रिया-कलापों में आपको सुख का अनुभव होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान कराये। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम ४ रत्ती और अधिकतम ८-१० रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु सप्तम भाव में स्थित है। आपको केतु रत्न लहसुनिया धारण करना चाहिए। केतु रत्न लहसुनिया आर्थिक मामलों में आपके लिए लाभदायक सिद्ध होगा। लहसुनिया रत्न धारण कर आप अपने दांपत्य जीवन को स्नेहयुक्त बनाये रखने में भी यह रत्न महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। इस रत्न की शुभता से आपको धन का उत्तम सुख प्राप्त होगा। आपकी आर्थिक चिन्ताओं का अंत होगा। रत्न प्रभाव से आपकी यात्राएं सुखद एवं सफल होंगी। वात रोग, अंतडियों के रोग और वीर्य संबंधी रोगों में कमी हो सकती है।

केतु मीन राशि में स्थित है व इसका स्वामी गुरु पंचम भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न धारण करने से आपको शिक्षा क्षेत्र में विशेष सम्मान, पद और सफलता प्राप्त होगी। रत्न शुभता आपको अधिकार शक्ति प्रदान करेगी। आप शिक्षा क्षेत्र या मनोरंजन क्षेत्र में अपनी विशेष योग्यता दिखा पाएंगे। इस रत्न को धारण करने से आप धन-संपत्ति का संचय करने में सफल होंगे। अध्ययन कार्यों में आपका आत्मविश्वास बढ़ा-चढ़ा रहेगा। एवं यह रत्न आपके संतान सुख को बढ़ाएगा। आपको कम परिश्रम करने पर भी अधिक लाभ देगा। विद्याध्ययन में आपकी रुचि जागृत होगी तथा धार्मिक क्रिया-कलापों में आपको सुख का अनुभव होगा।

लहसुनिया रत्न को चांदी धातु में जड़वाकर गुरुवार के दिन सूर्यास्त काल में धारण किया जा सकता है। लहसुनिया रत्न जड़ित अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, इसका धूप, दीप और फूलों से पूजन करने के बाद अनामिका अंगूली में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात केतु रत्न मंत्र ॐ के केतवे नमः का १ माला जाप करें। मंत्र जाप के बाद केतु ग्रह की वस्तुओं का दान किसी योग्य व्यक्ति को करना शुभ रहता है। केतु वस्तुएं इस प्रकार हैं- सप्तधान्य, नारियल, धूम्र वस्त्र। लहसुनिया रत्न का वजन कम से कम ४ रत्ती और अधिकतम ८-१० रत्ती होना चाहिए। अंगूठी रूप में रत्न धारण करने में किसी प्रकार की असमर्थता होने पर इसे लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है।

लहसुनिया रत्न धारण करते समय यह ध्यान रखना चाहिए कि इस रत्न के साथ माणिक्य एवं गोमेद रत्न धारण करना प्रतिकूल फल प्रदान कर सकता है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि सप्तम भाव में स्थित है। आपको शनि रत्न नीलम धारण करना चाहिए। नीलम रत्न आपके ग्रहस्थ जीवन को सुखमय बनाये रखने का प्रयास करेगा। विवाह के बाद भाग्योदय करेगा। रत्न शुभता आपके दांपत्य जीवन को सौहार्दपूर्ण बनाये रखने में सहयोग करेगी। आपको ठेकेदारी, कोयला, लोहा, खदानों आदि से जुड़े कामों से लाभ मिलेगा। रत्न की शुभता से आपको किसी विदेशी काम या विदेशी माल में एजेन्ट का काम करने से भी लाभ प्राप्त हो सकता है। यह रत्न आपके लिए शुभदायक रहेगा।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में शनि पंचमेश और षष्ठेश है। शनि त्रिकोण भाव के स्वामी है और लग्नेश बुध के मित्र भी है। अतः नीलम रत्न आपके लिए अनुकूल और शुभ रत्न सिद्ध हो सकता है। नीलम रत्न धारण करने से आपकी संतान का स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा। यह रत्न संतान सुख भी प्रदान कर सकता है। नीलम रत्न धारण से आपको विद्या ग्रहण या शैक्षिक क्षेत्र में शुभता प्राप्त हो सकती है। भूमि व संपत्ति से लाभ पाने के लिए भी आप नीलम रत्न धारण कर सकते हैं। यह रत्न शत्रुओं पर विजय पाने में सहयोगी रत्न सिद्ध हो सकता है।

नीलम रत्न शनिवार के दिन पंचधातु से निर्मित अंगूठी में जड़वाकर, संध्या काल में स्नानादि कर शुद्ध होकर अंगूठी को पंचामृत से स्नान कराकर, धूप, दीप एवं फूल से पूजन करने के बाद इस अंगूठी को मध्यमा अंगूठी में धारण करें। तत्पश्चात शनि मंत्र ॐ शं शनैश्चराय नमः का जाप एक माला करें। मंत्र जप के बाद इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- उड़द, काले तिल, तेल, काले वस्त्र आदि का दान किसी योग्य व्यक्ति को करें। नीलम रत्न कम से कम 3 रत्ती, अन्यथा 5-6 रत्ती का होना चाहिए।

नीलम रत्न के साथ माणिक्य, मूंगा, पुखराज धारण करने से बचना चाहिए। विशेष स्थितियों में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण किया जा सकता है। किसी कारणवश यदि इस रत्न को धारण न कर पाएं तो इसके उपरत्न फिरोजा, नीली, एमेथिस्ट एवं ७ मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु पंचम भाव में स्थित है। आपको गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण आपमें दयालुता और विनम्रता के गुण व्याप्त करेगा। आपकी गिनती बुद्धिमान, पवित्र और श्रेष्ठ व्यक्तियों में होगी। इस रत्न की शक्तियों से आप चतुर, समझदार और महान कार्य करने वाले बनेंगे। यह रत्न आपके लिए शुभ रत्न है। इसके प्रभाव से आप उत्तम वक्ता, धारा प्रवाह बोलने वाले और कुशल व्याख्याता होंगे। आपकी कल्पनाशक्ति उत्तम होगी। पुखराज रत्न आपको संघर्षों से मुंह न मोड़कर विपत्तियों से जूझते रहने की विशेषज्ञता देगा। आपकी न्यायशीलता में वृद्धि होगी।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में गुरु चतुर्थेश और सप्तमेश है। गुरु चतुर्थेश का पुखराज रत्न धारण करने से आपको सुख-सौभाग्य की प्राप्ति हो सकती है। पुखराज रत्न

आपको धार्मिक और संस्कारी जीवन साथी दे सकता है। यह रत्न चतुर्थ भाव के स्वामी का रत्न होने के कारण आपको संपत्ति व माता सुख, विद्या, बुद्धि व संतान पक्ष को सुखी रखने में लाभकारी सिद्ध हो सकता है। गुरु रत्न पुखराज आपको धनी, भाग्य व धर्म के क्षेत्र में सम्मान दिला सकता है। आप पुखराज रत्न धारण कर गुरु ग्रह की शुभता प्राप्त कर सकते हैं।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूली में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्नी से लेकर ८ रत्नी का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्रमा बारहवें भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपकी आयु में कमी हो सकती है। धन और स्वास्थ्य दोनों के पक्ष से यह रत्न आपको सहयोग नहीं कर रहा है। मोती रत्न आपकी मानसिक चिंताओं को बढ़ा सकता है। सृजनात्मक कार्यों में आय प्राप्त के प्रयास आपकी दिक्कतें बढ़ा सकते हैं। कला से जुड़े क्षेत्रों में भी आय प्राप्त के प्रयास असफल हो सकते हैं। मोती रत्न आपको अत्यधिक संवेदनशील बना सकता है। इसके प्रभाव से आपकी मानसिक स्वास्थ्यता में कमी हो सकती है। इस रत्न के प्रभाव से आपके पिता का आर्थिक स्तर आंशिक रूप से कुछ कमजोर हो सकता है। पिता से मिले धन और सुख का आप लाभ नहीं उठा पाएंगे। संतान संबंधी चिंताएं बढ़ सकती हैं। मोती रत्न आपके व्यर्थों में अस्थिरता का भाव दे सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में चंद्र एकादशेश भाव के स्वामी है। चंद्र का रत्न मोती धारण करने पर आपको धनार्जन एवं धन संचय करने में कष्ट की स्थिति आ सकती है। मोती रत्न आपकी सामाजिक एवं राजनैतिक क्षेत्र में उन्नति को बाधित कर सकता है। यह रत्न आपकी व्यापारी कुशलता में भी कमी कर सकता है। रत्न प्रभाव आपके वैवाहिक जीवन को दुःखद कर सकता है। मोती रत्न धारण से आय में अस्थिरता की स्थिति बन सकती है। शिक्षा और समाज से आपकी द्वेष भाव की स्थिति बन सकती है। मोती रत्न आपको प्रवास और गुप्त चिंताएं दे सकता है। जीवन लक्ष्य प्राप्ति के लिए आपमें संकल्प शक्ति की कमी हो सकती है।

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल प्रथम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः मंगल रत्न मूंगा धारण से आप दुस्साहसी हो सकते हैं।

जिसके कारण दुर्घटनाओं और चोटों की स्थिति बन सकती हैं। अत्यधिक दबाव में कार्य करने में आप असमर्थ हो सकते हैं। मूंगा रत्न आपको सिर दर्द दे सकता है। रत्न प्रभाव से वाणी पर नियंत्रण कम और आपका अत्यधिक क्रोध का स्वभाव हो सकता है। इसके अलावा यह रत्न धारण करने पर आपको अपने शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने में विशेष प्रयास करने पड़ सकते हैं। स्वास्थ्य की कमी के चलते बुखार आपको अपने प्रभाव में ले सकता है। इसके अतिरिक्त लग्न भाव में मंगल चतुर्थ, सप्तम एवं अष्टम भाव को देख रहा है। अतः इस रत्न को यदि आप धारण करते हैं तो सुख, ग्रहस्थ जीवन एवं बाधाओं का सामना भी आपको करना पड़ सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में मंगल तृतीयेश एवं अष्टमेश है। मंगल रत्न मूंगा धारण करने पर पराक्रम भाव आपके काम नहीं आ पाएगा। साहस और जोखिम से काम लेना आपके लिए लाभदायक नहीं रहेगा। मूंगा रत्न आपको शत्रुओं से पराजित करा सकता है। रत्न प्रभाव से आपमें स्वार्थ भावना प्रवेश कर सकती है। मूंगा रत्न आपको पैतृक सम्पत्ति से वंचित कर सकता है। रत्न प्रभाव से आपको घर का सुख प्राप्त नहीं हो पाएगा। इस रत्न को धारण करने पर आपको कठिनाता से धन प्राप्त होगा। स्पष्ट वक्ता होने के कारण आपको मित्रों में उचित सम्मान नहीं मिल पाएगा। यह रत्न आपको तार्किक बुद्धि देगा। रत्न प्रभाव से आप आलोचनात्मक लेखन की ओर आप अग्रसित हो सकते हैं। यह रत्न आपको नौकरी में शीघ्र बदलाव दे सकता है।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य छठे भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपके रोग, ऋण और शत्रुओं की संख्या बढ़ सकती है। यह रत्न आपके तेज में कमी कर सकता है। नैनिहाल पक्ष से आपके संबंध खराब हो सकते हैं। माणिक्य रत्न प्रभाव से आपकी माता के कष्ट बढ़ सकते हैं। अत्यधिक कठोरता आपके स्वभाव का अंग बन सकती है। माणिक्य रत्न नौकरी के क्षेत्र में परेशानियां दे सकता है। उच्चाधिकारियों से आपके संबंध खराब कर सकता है। कार्यक्षेत्र में बदलाव के योग बन सकते हैं। इस रत्न को धारण करने के बाद आपके जीवन के उतार चढ़ाव बढ़ सकते हैं। नैनिहाल पक्ष के लोगों को कष्ट मिल सकता है।

आपकी कन्या लग्न की कुंडली में सूर्य द्वादश भाव के स्वामी है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण करने पर आपको स्वास्थ्य सुख की कमी हो सकती है। यह रत्न आपके धन संचय में कमी करेगा। माणिक्य रत्न धारण से आपके व्ययों में वृद्धि होगी। यह रत्न आपको बन्धु विरोधी बना सकता है। रत्न प्रभाव से आप व्यापार क्षेत्र में विफल हो सकते हैं। माणिक्य रत्न धारण से आपमें धर्म कार्या में श्रद्धा से अधिक पाखंड भाव हो सकता है। यह रत्न विदेश में भाग्योदय में विलम्ब देगा। इस रत्न से आपकी दृष्टि मंद हो सकती है। यह रत्न आपके पिता का स्वास्थ्य पीड़ित कर पिता सुख में कमी करेगा। आप पिता के विरोधी हो सकते हैं। माणिक्य रत्न आपको विदेशगमन में धन का व्यय करा सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

सूर्य
(25/08/2023 - 24/08/2029)

सूर्य की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, पुखराज, लहसुनिया, मोती व नीलम रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(24/08/2029 - 25/08/2039)

चन्द्र की दशा में आपका पन्ना व हीरा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, नीलम, लहसुनिया, मोती व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(25/08/2039 - 25/08/2046)

मंगल की दशा में आपका पन्ना, हीरा व लहसुनिया रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद, नीलम, पुखराज व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा रत्न नेष्ट हैं और माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(25/08/2046 - 24/08/2064)

राहु की दशा में आपका पन्ना, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

नीलम, लहसुनिया व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने

हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

गुरु
(24/08/2064 - 24/08/2080)

गुरु की दशा में आपका पन्ना, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, पुखराज, नीलम व मोती रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मूंगा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शनि
(24/08/2080 - 25/08/2099)

शनि की दशा में आपका पन्ना, हीरा, गोमेद व नीलम रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, माणिक्य व मूंगा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

बुध
(25/08/2099 - 25/08/2116)

बुध की दशा में आपका पन्ना, हीरा व गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

लहसुनिया, नीलम व पुखराज रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

मोती, मूंगा व माणिक्य रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गोमेद

आपका जन्म कन्या राशि के लग्न में हुआ है। जिसका स्वामी ग्रह बुध होता है। गोमेद रत्न राहु ग्रह के लिये धारण किया जाता है जो शनि के समान होता है और शनि कन्या राशि के लग्न के जातकों के लिये कारक रत्न होता है। क्योंकि शनि की मकर राशि कन्या लग्न से पंचम भाव में स्थित होती है। किसी भी जातक के लिये पंचमेश का प्रबल होना बहुत अधिक महत्वपूर्ण होता है क्योंकि विद्या प्राप्ति के लिए किये गये प्रयास या कार्य के लिये पंचमेश का रत्न धारण करना श्रेष्ठ होता है साथ ही यह प्रेम संबंधों का भाव भी होता है। बुद्धि, बल का आकलन पंचम भाव से देखते हैं। संतान सुख से वंचित जातकों के लिए या संतान होने में देरी होने वाले जातकों के लिये पंचमेश का रत्न संतान सुख में वृद्धि करता है।

अतः कन्या राशि के लग्न वाले जातकों को गोमेद रत्न धारण करके राहु या शनि को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को संतान, बुद्धि, प्रेम संबंध व विद्या से संबंधित सभी लाभ मिलेंगे और जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी राहु या शनि न्याय व आध्यात्म का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को आत्मिक बल की प्राप्ति तथा अपने अधीनस्थ कर्मचारी व सेवकों का सहयोग व उनसे सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को सेवकों की शुभ कामनाएँ भी प्राप्त होती हैं। राहु ग्रह मन की असमंजस स्थिति से दूर करता है। यह दादा-दादी का प्रतिनिधि ग्रह है। उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है। जिसको त्वचा संबंधी रोग या कोढ़ जैसी बीमारी भी हो गयी हो तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा संशय की स्थिति में संशय से मुक्ति दिलाता है।

गोमेद को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि मध्यमा अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में शनि की अंगुली मानी जाती है तथा राहु ग्रह शनि के समान माना जाता है। गोमेद राहु का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् शनिवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय सांयकाल शनि की होरा में श्रेष्ठ होता है। गोमेद को यदि शनिवार के साथ-साथ राहु के नक्षत्र अर्थात् आर्द्रा, स्वाती और शतभिषा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गोमेद को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर काले रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, राहु के 108 मंत्रों का जाप करके इसे ऊर्जावान बनाकर माथे से लगाकर सीधे हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करना चाहिए।

राहु का मंत्र - ॐ रां राहुवे नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि राहु से संबंधित पदार्थ जैसे काले तिल, सरसों का तेल, सवा मीटर नीले कपड़े का दान करें तो गोमेद की अंगूठी धारण करना और भी अधिक फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन राहु का 108 बार स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें और सरस्वती जी की आराधना करें तो यह गोमेद की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रतिदिन प्रातःकाल कबूतरों को दाना, चीरियों को आटा व मछलियों को आटे की गोली खिलायें तो और अधिक शुभकारी होगा।

कन्या लग्न वाले जातक यदि गोमेद की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन भाग्यशाली व्यक्ति के रूप में सुखी, समृद्धिशाली एवं संतान सुख से परिपूर्ण जीवन प्राप्त करते हैं।



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहाँ आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ेतरा कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली कन्या लग्न की है। कन्या लग्न पर बुध का प्रभाव होने से आप अत्यंत बुद्धिमान होते हैं। आपका व्यक्तित्व ऐसा होता है कि कोई भी सहजता से आपकी ओर आकर्षित हो जाता है। आपका मस्तिष्क अत्यंत रचनात्मक होता है। पृथ्वी तत्त्व होने से जिस प्रकार पृथ्वी सभी को धारण करती है उसी प्रकार आपके अन्दर भी सहनशीलता कूट-कूट कर भरी होती है। वायु प्रकृति होने से आप स्वयं को हर परिस्थिति में ढाल लेते हैं। सभी को माफ करने का स्वभाव, विपरीत परिस्थितियों में धैर्य रखना एवं समस्याओं का समाधान निकालना की क्षमता आपको विशिष्ट व्यक्तित्व बनाता है। लग्नेश बुध के कारण भाषा पर अच्छी पकड़ एवं वाणी की कुशलता तथा किसी भी बात का तर्कपूर्ण तथ्य आप चाहते हैं।

कुंडली का 6, 8 व 12 वां भाव त्रिक भाव होने के कारण विशेष अशुभता लिए होते हैं। आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्ठेश शनि है, अष्टमेश व तृतीयेश मंगल तथा द्वादशेश सूर्य हैं। इन भावों की अशुभता आपके जीवन में रोग, ऋण, शत्रु, आयु, बाधाएं, शोक, स्वास्थ्य हानि, अस्पताल, कोर्ट-कचहरी, जेल, व्यय और हानियों का विश्लेषण किया जाता है। त्रिक भाव के स्वामी जिस भाव में जाते हैं, उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश अवश्य करते हैं। जिसके फलस्वरूप आपको मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। 6, 8 व 12 भावों में से 8 वां भाव सबसे अधिक दुष्ट/अशुभ होता है।

आपकी कुंडली में पंचमेश व षष्ठेश शनि है, पंचमेश- षष्ठेश शनि आपको विद्या, बुद्धि, विवेक, वाणी, संतान, भय, ऋण, रोग, पाप कर्म, संघर्ष, कष्ट, परिश्रम, धैर्य, मामा व ननिहाल पक्ष के लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है।

अष्टमेश व तृतीयेश मंगल आपके पराक्रम, पुरुषार्थ में कमी करता है, साथ ही बाहुबल, भाई-बहन के सुखों में कमी, अस्पताल, पुलिस-कोर्ट कचहरी के मामले परेशानियों का कारण बन सकते हैं।

द्वादशेश सूर्य, द्वादश भाव का स्वामी सूर्य नेत्र रोग, व्यय, हानि, सरकारी दंड, कारागार, सम्बन्ध विच्छेद का कारक बन सकता है।

आपकी कुंडली के छठे भाव में सूर्य स्थित है। इस भाव में सूर्य शत्रुनाशक, क्रोधी, घमंडी, कामातुर, मामा -मौसी को कष्ट, निरुत्साही, छाती के रोग, ऋणी सम्बन्धी कष्ट दे सकते हैं। हृदय सम्बन्धी रोग भी स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकते हैं।

चन्द्र द्वादश भाव में आपको बचपन में रोगी, कष्टों को सहने वाला, शत्रुओं की अधिकता, धन-हानि, असत्य वक्ता बना सकता है। स्वास्थ्य के पक्ष से भी चन्द्र की यह स्थिति शुभ फलदायी नहीं है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 3, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती है।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक है।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	21/02/1997-17/04/1998	-----	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	06/09/2004-13/01/2005	26/05/2005-01/11/2006	10/01/2007-16/07/2007
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	01/11/2006-10/01/2007	16/07/2007-10/09/2009	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	10/09/2009-15/11/2011	16/05/2012-04/08/2012	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	-----

द्वितीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	29/03/2025-03/06/2027	20/10/2027-23/02/2028	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	13/07/2034-27/08/2036	-----	-----
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	27/08/2036-22/10/2038	05/04/2039-13/07/2039	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	22/10/2038-05/04/2039	13/07/2039-28/01/2041	06/02/2041-26/09/2041
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	11/12/2043-23/06/2044	30/08/2044-08/12/2046	-----

तृतीय चक्र:

अष्टम स्थानस्थ ढैया	14/05/2054-02/09/2054	05/02/2055-07/04/2057	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	24/08/2063-06/02/2064	09/05/2064-13/10/2065	03/02/2066-03/07/2066
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	13/10/2065-03/02/2066	03/07/2066-30/08/2068	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	30/08/2068-04/11/2070	-----	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/02/2073-31/03/2073	23/10/2073-16/01/2076	11/07/2076-11/10/2076

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया
साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया

फल

शुभ
सम
अशुभ
सम
सम

क्षेत्र

दम्पति
अल्प बचत
व्यय
स्वास्थ्य
पराक्रम हानि

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुवः स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके। इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात् प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के पश्चात आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा

जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।



कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। अतः इस योग से ग्रसित जातकों के लिए आवश्यक है कि वे इस काल सर्प योग का निदान करा लें। जिससे कि कुंडली के शुभ योगों के फल पूर्णयता मिलते रहें।

द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाद्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाद्ध नामक योग बनता है।

यदि लग्न कुंडली में सभी सातों ग्रह राहु से केतु के मध्य में हो लेकिन अंशानुसार कुछ ग्रह राहु केतु की धुरी से बाहर हों तो आंशिक काल सर्प योग कहलाता है। यदि कोई एक ग्रह राहु-केतु की धुरी से बाहर हो तो भी आंशिक काल सर्प योग बनता है।

यदि राहु से केतु तक सभी भावों में कोई न कोई ग्रह स्थित हो तो यह योग पूर्ण रूप से फलित होता है। यदि राहु-केतु के साथ सूर्य या चंद्र हो तो यह योग अधिक प्रभावशाली होता है। यदि राहु, सूर्य व चंद्र तीनों एक साथ हो तो ग्रहणकाल सर्प योग बनता है। इसका फल हजार गुना अधिक हो जाता है। ऐसे जातक को काल सर्प योग की शांति करवाना अति आवश्यक होता है।

काल सर्प योग का प्रभाव

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं।

काल सर्प योग के औपचारिक उपाय के द्वारा इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है। जन्मपत्रिका के अनुसार जब-जब राहु एवं केतु की महादशा, अंतर्दशा आदि

आती है तब तब यह योग असर दिखाता है। गोचर में राहु व केतु का जन्मकालिक राहु-केतु व चंद्र पर भ्रमण भी इस योग को सक्रिय कर देता है। उस समय विशेष ध्यान देकर पूजा अर्चनादि श्रद्धा विश्वास के साथ करें, अवश्य लाभ होगा। कालसर्प योग यंत्र के सम्मुख 43 दिन तक सरसों के तेल का दीया जलाने से भी इन कष्टों से राहत एवं छुटकारा प्राप्त किया जा सकता है।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मकुण्डली में अनन्त नामक कालसर्प योग केवल अनुदित रूप में विद्यमान है। अनुदित योग पूर्णरूप से कालसर्प योग की परिभाषा में नहीं आता, लेकिन फिर भी इसका कुछ फल अवश्य मिलता है। इसके कारण जातक को व्यक्तित्व निर्माण एवं आगे बढ़ने में आंशिक रूप से संघर्ष करना पड़ता है। कभी-कभी विरक्ति पैदा होती है। गृहस्थ जीवन कुछ अस्तव्यस्त रहता है। न्यायालय से थोड़ा बहुत नुकसान उठाना पड़ता है। वैवाहिक जीवन सामान्य होते हुए भी कभी-कभी दुःखमय बन जाता है। जीवन में समय-समय पर आंशिक रूप में बाधाएँ आती हैं। परन्तु कालान्तर में सभी विघ्न-बाधाएँ दूर होती चली जाती हैं। जीवन में अनेक बार अपयश मिलने का भय बना रहता है। अपने रिश्तेदार नुकसान पहुँचाने की चेष्टा करते हैं, परन्तु उसमें वे सफल नहीं होते। जातक बार-बार अपने कार्य को बदलता है। परिणामस्वरूप आंशिक रूप में कभी क्षति उठानी पड़ती है। खासकर साहूकारी के व्यवसाय में नुकसान उठता है। लेकिन जातक के जीवन में एक चमत्कारिक समय भी आता है। और समय-समय पर शुभ कार्य सम्पादित होते रहते हैं। आर्थिक स्थिति थोड़ा नाजुक होती है। इस योग के कारण जातक थोड़ा बहुत पराक्रमहीन, आलसी एवं नीचकर्म करने में तत्पर हो जाता है।

यदि आप कभी उपरोक्त परेशानी महसूस करते हैं तो निम्नलिखित उपाय करें, अवश्य लाभ मिलेगा।

1. काल सर्प दोष निवारण यंत्र घर में स्थापित करके, इसका नियमित पूजन करें।
2. बहते पानी में नारियल के फल को तीन बार शुभ मुहूर्त में प्रवाहित करें।
3. बहते पानी में कोयला को शुभ मुहूर्त में तीन बार प्रवाहित करें।
4. हरिजन को मसूर की दाल तथा द्रव्य शुभ मुहूर्त में तीन बार दान करें।
5. हनुमान चलीसा का 108 बार पाठ करें।
6. शयन कक्ष में लाल रंग के पर्दे, चादर तथा तकियों का उपयोग करें।
7. कुल देवता की पूजा करें।
8. धूम्रवस्त्र, तिल, कम्बल एवं सप्तधान्य शुभ मुहूर्त में रात्रि को दान करें।
9. केतु की उपासना उसकी महादशा में अवश्य करें।
10. देवदारु, सरसों तथा लोहवान को उबाल कर एक बार स्नान करें।
11. सवा महीने जौ के दाने पक्षियों को खिलाएँ।
12. नीला रुमाल, नीला घड़ी का पट्टा, नीला पैन्, लोहे की अंगूठी धारण करें।

विशेष

ध्यान रखें कालसर्पयोग का पूजन केवल श्रीखण्ड चन्दन से करें। कुंकुम, सिन्दूर,

रोली आदि का प्रयोग न करें। तिरुपति बालाजी के पास कालाहस्ती शिव मंदिर में जाकर कालसर्प योग की शांति का उपाय विधि-विधान से एक बार करें अथवा 12 ज्योतिर्लिंग में से किसी भी ज्योतिर्लिंग में जाकर पूजा करें जैसे - कि सौराष्ट्र गुजरात में सोमनाथ मंदिर, महाराष्ट्र के नासिक में त्रयंबकेश्वर मंदिर, उज्जैन, भीमाशंकर, नागेश्वर, रामेश्वर, वगैरे।



पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।

7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराउंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।

11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- पंचम भाव का स्वामी शनि है तथा उस पर राहु का प्रभाव है ।
- नवम भाव के स्वामी पर राहु का प्रभाव है ।
- त्रिक भाव का स्वामी लग्न में स्थित है और उस पर शनि और राहु का प्रभाव है ।

आपकी कुण्डली में शुक्र और शनि के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुण्डली में शुक्र पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी महिला पूर्वज द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ गरीब या जरूरतमंद स्त्रियों, कन्याओं को तथा पत्नी को दान दें । 11 वर्ष से छोटी 9 कन्याओं को मंदिर में खीर खिलायें ।

आपकी कुण्डली में शनि पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा दलित पर किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ भगवान रुद्र की पूजा करें । पीपल को जल चढ़ायें व पूजा करें । शम्मी की समिधा से हवन करें । बकरी व शनि प्रीतकारी वस्तुओं का दान करें । गरीब या जरूरतमंदों की सहायता के रूप में दान

दें तथा कौए को खाने का पहला ग्रास खिलायें।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है। संभव है कि किसी शुभकार्य के कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांड़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।

ग्रह फल

सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जातक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान्, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

कुम्भ राशि में रवि हो तो जातक स्थिरचित्त, स्वार्थी, कार्यदक्ष, कोधी, दुःखी, निर्धन, अच्छा ज्योतिषी एवं मध्य अवस्था के पश्चात् सन्यास लेने वाला होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

बारहवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक मृदुभाषी, चिन्ताशील, एकात्प्रिय, कोधी, कफरोगी, चंचल, नेत्ररोगी एवं अधिक व्यय करने वाला होता है।

सिंह राशि में चन्द्रमा हो तो जातक दृढदेही, दाँत तथा पेट का रोगी, मातृभक्त, अल्पसन्ततिवान्, गम्भीर, दानी, साहसी, शान दिखाने वाला अभिमानी, महत्वाकांक्षी एवं पुराने विचारों वाला होता है।

आपके जन्म समय में चन्द्रमा की स्थिति द्वादश भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य अच्छा रहेगा तथा यदा कदा कष्टों का भी सामना करना पड़ेगा। लेकिन आपके प्रति उनके मन में वात्सल्य का भाव रहेगा तथा जीवन में आपको प्रायः यथाशक्ति अपना सहयोग प्रदान करती रहेंगी। आप उनसे अच्छे तथा पुण्य के कार्यों के प्रति प्रवृत्त होंगे तथा समयानुसार दानादि को भी उन्हीं के कथनानुसार सम्पन्न करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति आदर का भाव रहेगा एवं उनकी आज्ञा का पालन आप कुछ अवसरों को छोड़कर करते रहेंगे। आपके परस्पर संबंध विशेष मधुर नहीं होंगे क्योंकि आप में काफी मतभेद रहेंगे तथापि सांसारिक संबंधों में कोई तनाव नहीं रहेगा एवं सामंजस्य पूर्वक आप के परस्पर व्यवहार चलते रहेंगे। साथ ही उन्हें कष्ट के समय आप अपनी ओर से पूर्ण सहयोग तथा सहायता अवश्य प्रदान करेंगे।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

कन्या राशि में मंगल हो तो जातक सुखी, शिल्पज्ञ, पापभीरु, लोकमान्य एवं व्यवहार कुशल होता है।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी- प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आधिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

बुध

पंचमभाव में बुध हो तो जातक उद्यमी, विद्वान्, कवि, प्रसन्न कुशाग्रबुद्धि, गण्य-मान्य, सुखी, वाद्यप्रिय एवं सदाचारी होता है।

मकर राशि में बुध हो तो जातक कुलहीन, दुःशील, मिथ्याभाषी, ऋणी, मूर्ख, डरपोक, व्यापार में रुचि लेने वाला, किफायतसार, चतुर एवं परिश्रमी होता है।

गुरु

पंचमभाव में गुरु हो तो जातक नीतिविशारद, सन्ततिवान्, सट्टे से धन प्राप्त करने वाला, कुलश्रेष्ठ, लोकप्रिय, कुटुम्ब में सबसे ऊँचा स्थान, ज्योतिषी एवं आस्तिक होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।

शुक्र

पंचम भाव में शुक्र हो तो जातक विद्वान्, प्रतिभाशाली, वक्ता, कवि, पुत्रवान्, लाभयुक्त, व्यवसायी, शत्रुनाशक, उदार, दानी, सद्गुणी, न्यायवान् एवं आस्तिक होता है।

मकर राशि में शुक्र हो तो जातक बलहीन, कृपण, हृदयरोगी, दुखी, मानी, नीच

जाति की स्त्रियों में रुचि, सिद्धान्तहीन एवं अनैतिक चरित्र होता है।

शनि

सप्तम भाव में शनि हो तो जातक क्रोधी, कामी, विलासी, अविवाहित रहना या दुःखी विवाहित जीवन, धन सुखहीन, भ्रमणशील, नीचकर्मरत, स्त्रीभक्त एवं आलसी होता है।

मीन राशि में शनि हो तो जातक अविचारी, शिल्पकार हतोत्साही, धनी, प्रसिद्ध, सुखी एवं दूसरों की सहायता करने वाला होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तकरोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

कन्या राशि में राहु हो तो जातक लोकप्रिय, मधुरभाषी, कविलेखक, गवैया एवं धनी होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुःखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

मीन राशि में केतु हो तो जातक परिश्रमी, धार्मिक प्रवृत्तिवाला, कर्णरोगी, प्रवासी, चंचल और कार्यपरायण होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। सामान्यतया कन्या लग्न में उत्पन्न जातक अध्ययनशील होते हैं तथा कई विषयों के ज्ञानार्जन में उनकी रुचि रहती है। अतः समाज में सामान्यतया विद्वान के रूप में इनकी छवि रहती है। ये गुणवान व्यक्ति होते हैं परन्तु स्त्रियों के प्रति इनके मन में अधिक आकर्षण रहता है। साथ ही भाग्य इनका प्रबल रहता है तथा अल्प परिश्रम से ही इनके सांसारिक महत्व के कार्य सफल हो जाते हैं जिससे भौतिक सुख संसाधन एवं धनैश्वर्य की इनके पास प्रचुरता रहती है। ये अत्यंत बुद्धिमान होते हैं तथा अपनी बुद्धि के द्वारा कठिन से कठिन समस्या का समाधान करने में समर्थ रहते हैं। अतः सरकारी कार्यों में प्रशासन के क्षेत्र में ये अपना योगदान प्रदान करते हैं तथा वहां सम्मानित एवं आदरणीय रहते हैं। ये भावुकता की अपेक्षा बुद्धि से कार्य लेते हैं जिससे इनके उन्नति मार्ग सर्वदा प्रशस्त रहते हैं।

अतः इसके प्रभाव से आपका व्यक्तित्व आकर्षक होगा तथा आपसे सभी लोग प्रभावित होंगे। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि होगी तथा विभिन्न विषयों का ज्ञान अर्जित करने में समर्थ होंगे। आप लेखन मनोविज्ञान या आलोचना के क्षेत्र में सफलता अर्जित करेंगे। आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा सांसारिक महत्व के कार्यों में आपको अल्प परिश्रम से ही शीघ्र सफलता प्राप्त होगी। आपकी बुद्धि में भी तीक्ष्णता रहेगी तथा गूढ़ से गूढ़ समस्याओं का समाधान करने में समर्थ होंगे फलतः प्रशासनिक क्षेत्र में आप अपना योगदान प्रदान कर सकते हैं।

लग्न में मंगल की स्थिति के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा मानसिक उद्विग्नता रहेगी। पिता के प्रति आपके मन में पूर्ण श्रद्धा होगी तथा उनकी सेवा करने में सर्वदा तत्पर रहेंगे। बाल्यावस्था में आपका समय संघर्ष पूर्ण रहेगा परन्तु मध्य अवस्था के बाद आप पूर्ण सुखी रहेंगे। पुत्र संतति से आप युक्त होंगे तथा इनसे आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। आप एक पराक्रमी पुरुष होंगे तथा स्वपराक्रम एवं योग्यता से सांसारिक कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे।

आप में तेजस्विता का भाव भी विद्यमान रहेगा अतः अवसरानुकूल आप उग्रता का भी प्रदर्शन करेंगे लेकिन इससे आपको कई बार अनावश्यक परेशानियों का सामना करना पड़ेगा। अतः उग्रता के भाव का यत्नपूर्वक परित्याग करना चाहिए। अन्य जनों के प्रति आपके मन में उदारता का भाव भी रहेगा तथा समयानुसार परोपकार संबंधी कार्यों में भी इच्छा रहेगी। कार्य क्षेत्र में आपका प्रभाव रहेगा तथा लेखन या कला सम्बन्धी कार्यों में आपको सफलता मिलेगी। आपकी बुद्धि भी तीव्र होगी तथा कठिन से कठिन समस्याओं का समाधान करने में समर्थ रहेंगे अतः प्रशासनिक क्षेत्र में आप अपना योगदान प्रदान कर सकते हैं।

धर्म के प्रति आपकी सामान्य श्रद्धा रहेगी तथा अल्प मात्रा में ही धार्मिक कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे। मित्र वर्ग में आपका प्रभाव रहेगा तथा सभी लोग आपको सहयोग प्रदान करेंगे इसके अतिरिक्त आप अपने पराक्रम तेजस्विता बुद्धिमता तथा योग्यता से

इच्छित मान - सम्मान प्राप्त करेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करेंगे।



Pulak Sagarm - Hastrekha, Jyotish & Vastu

T - 13, Cosmo Tower, Hanuman Chauraha
Jankganj, Gwalior pin code 474001

9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म काल में द्वितीय भाव में तुलाराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है । अतः इसके प्रभाव से आपका पारिवारिक जीवन सुख शान्ति एवं समृद्धि से युक्त रहेगा तथा समस्त पारिवारिक जन परस्पर प्रेम पूर्वक रहेंगे तथा एक दूसरे को अपना पूर्ण सुख एवं सहयोग प्रदान करेंगे। आपकी वाणी अत्यंत ही मृदु एवं प्रभावशाली रहेगी तथा अन्य जनों को अपनी वाणी से प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही वाक्चातुर्य से कई शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में भी सफल होंगे। रहेंगे। प्रौढ़वास्था में आपको अल्प मात्रा में नेत्र संबंधी कष्ट प्राप्त हो सकते हैं।

धर्म के प्रति आपके मन में पूर्ण आस्था रहेगी तथा समय समय पर धार्मिक एवं अन्य शुभ मांगलिक कार्यों को सम्पन्न करते रहेंगे। साथ ही अन्य उत्सवों का आयोजन करने में भी आपकी रुचि रहेगी। जीवन में आपको पैतृक सम्पत्ति की प्राप्ति होगी तथा अपने प्रयत्न एवं परिश्रम से भी आप वांछित धनऐश्वर्य तथा वैभव अर्जित करेंगे। पारिवारिक जनों को प्रसन्नता तथा सुविधा प्रदान करने के लिए आप हमेशा यत्नशील रहेंगे। इसके अतिरिक्त समाज में आप एक आदरणीय पुरुष होंगे तथा सौभाग्य बल से आपका जीवन सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत होगा। साथ ही व्यापार संबंधी लाभ भी समय समय पर होता रहेगा।

शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में धनुराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप समस्त संसारिक एवं भौतिक सुखों को अर्जित करने में सफल होंगे। आधुनिक सुख संसाधनों एवं उपकरणों से भी युक्त होंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इनका उपभोग करेंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा समाज में आपको यथोचित स्तर बना रहेगा तथा सभी लोग आपको वांछित सम्मान एवं आदर प्रदान करेंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में आपको काफी चल एवं अचल सम्पत्ति का स्वामित्व प्राप्त होगा। मामा के प्रभाव या सहयोग से भी आपको काफी धन सम्पत्ति मिल सकती है। आप स्वपराक्रम परिश्रम एवं बुद्धिमता से चल एवं अचल सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपको चल सम्पत्ति से शीघ्र लाभ होगा अतः इसके लिए आप समयानुसार पूँजी निवेश कर सकते हैं।

आपका आवास उत्तम होगा तथा आधुनिक सुख सुविधाओं से युक्त रहेगा। समस्त भौतिक उपकरणों की इसमें प्रबलता रहेगी। घर की सुन्दरता का आप विशेष ध्यान रखेंगे तथा अन्य जनों को भी इसके लिए प्रेरित करेंगे। आपका घर किसी अच्छी अच्छी कालोनी में होगा तथा पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे एवं आपसी संबंधों में भी अनुकूलता होगी। इसके अतिरिक्त उत्तमवाहन से भी आप युक्त होंगे तथा युवावस्था के बाद अपने वाहन का सुख प्राप्त करेंगे।

आपकी माता जी शिक्षित, बुद्धिमान एवं हास्य प्रिय महिला होंगी तथा अपने हास्यप्रिय स्वभाव से सभी को प्रसन्न तथा प्रभावित करेंगी। परिवार का वह पूर्ण लालन-पालन करेंगी तथा अपनी ओर से किसी भी सदस्य को कोई भी कष्ट नहीं होने देंगी। परिवार में सभी लोग उनकी आज्ञा का पालन करेंगे तथा मान-सम्मान भी प्रदान करेंगे। आपके प्रति उनका विशिष्ट स्नेह भाव होगा एवं आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आपको समय समय पर उनसे वांछित आर्थिक सहयोग भी मिलता रहेगा। आप भी उनका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से कोई कष्ट नहीं होने देंगे। इससे आपके आपसी संबंधों में मधुरता का भाव विद्यमान होगा।

लग्नेश बुध की स्थिति के प्रभाव से आप प्रारंभ से ही एक अध्ययनशील व्यक्ति होंगे तथा अपनी प्रारंभिक कक्षाओं से ही परीक्षाओं में अच्छे अंक अर्जित करेंगे। आप स्नातक परीक्षा भी अच्छे अंकों से ससम्मान उत्तीर्ण करेंगे। इससे आपके मन में आत्मविश्वास के भाव की वृद्धि होगी तथा भविष्य भी उज्ज्वल बनेगा। स्वजनों एवं मित्रवर्ग से आपको पूर्ण प्रोत्साहन तथा सम्मान मिलेगा। इससे अतिरिक्त आप न्याय संबंधित शिक्षा में इच्छित सफलता प्राप्त कर सकते हैं।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। तथा बृहस्पति भी अपनी नीच राशि में पंचमभाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से यद्यपि आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपने कार्य कलापों को समान्यतया बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न करेंगे लेकिन किसी समस्या के शीघ्र समाधान में अपने आप को असमर्थ सा महसूस करेंगे। आप में शीघ्र निर्णय लेने की क्षमता भी कम ही होगी तथापि शुभ ग्रह की नीचराशिस्थ स्थिति से विलम्ब से ही सही सकारात्मक निर्णय लेने में समर्थ होंगे। वैदिक साहित्य धर्म एवं दर्शन के प्रति आपकी न्यूनाधिक मात्रा में रुचि होगी। आधुनिक बौद्धिक विषयों में भी आप रुचिशील होंगे तथा परिश्रम पूर्वक इनका ज्ञानार्जन करके अपनी विद्वता में वृद्धि करेंगे जिससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

पंचमभाव में नीचस्थ बृहस्पति के प्रभाव से प्रेम-प्रसंगों में भी आपकी रुचि होगी तथा मनोरंजन एवं आत्म सन्तुष्टि के लिए आप ऐसे सम्बन्धों को स्थापित करने के इच्छुक होंगे लेकिन आपको ऐसे प्रसंगों में मर्यादा तथा नैतिकता का यत्नपूर्वक पालन करना चाहिए अन्यथा इससे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है।

बृहस्पति की नीचस्थ स्थिति पंचमभाव में होने के कारण आपको सन्तति प्राप्ति में किंचित विलम्ब एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ सकता है लेकिन सन्तति प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी सन्तति तेजस्वी, पराक्रमी एवं परिश्रमी होगी तथा अपने इन्हीं गुणों से वे जीवन में उन्नति तथा सफलता अर्जित करेंगे। माता-पिता के प्रति उनके मन में श्रद्धा एवं सम्मान का भाव होगा तथापि यदा-कदा वे अपनी मर्जी के कार्य कर सकते हैं तथा माता-पिता की आज्ञा-पालन में उपेक्षा कर सकते हैं। वे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में उनकी सलाह एवं सहयोग भी अल्प मात्रा में लेंगे। लेकिन इसकी आपको चिन्ता नहीं करनी चाहिए तथा उन्हें स्वतन्त्र कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे आपसी सम्बन्धों में सदभाव एवं विश्वास बना रहेगा। इसके अतिरिक्त बच्चों से आपको वृद्धावस्था में विशेष अपेक्षा नहीं रखनी चाहिए तथा अपने लिए यथोचित धन आदि संचित करके रखना चाहिए।

अध्ययन की दृष्टि से आपकी सन्तति परिश्रमी होगी तथा अपनी योग्यता एवं परिश्रम से सन्तोष जनक प्रगति करेंगे। आप भी उनकी शिक्षा का पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा आधुनिक परिवेश प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त यदा-कदा बच्चे अन्य सामाजिक जनों से वाद-विवाद भी कर सकते हैं जिससे आपको परेशानी की अनुभूति होगी परन्तु अपने सद्व्यवहार से आप इसे सुलझाने में समर्थ होंगे। इस प्रकार सन्तति सुख आपका मध्यम ही होगा।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा शनि भी सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है। सामान्यतया सप्तम भाव में मीन राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील धनवान वात कफ प्रवृत्ति का होता है लेकिन शनि के प्रभाव से उसमें उग्रता का भाव भी रहता है तथा परिश्रम पूर्वक अपने सांसारिक कार्यों को सम्पन्न करता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की महिला होंगी परन्तु यदा कदा उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगी। शनि के प्रभाव से वह सांसारिक कार्य कलापों को परिश्रम से सम्पन्न करेंगी। भौतिकता के प्रति भी उनकी रुचि होगी कर्तव्य परायणता का भाव भी अल्प ही रहेगा जिससे समाज एवं परिवार के प्रति ईमानदारी से अपने कर्तव्यों का पालन कम ही करेंगी।

आपकी पत्नी श्यामवर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद ऊंचा होगा। शनि के प्रभाव से उनकी शारीरिक संरचना पतलेपन से युक्त होगी परन्तु अन्य अंग एवं प्रत्यंग पुष्ट एवं सुडौल होंगे जिससे उनके आकर्षण में वृद्धि होगी तथा व्यक्तित्व में भी निखार आएगा। सौन्दर्य में अभिवृद्धि के लिए वे आधुनिक सौन्दर्य प्रसाधनों का भी उपयोग करेंगी। आधुनिकता के प्रति उनकी रुचि होगी तथा भौतिक उपकरण तथा कलात्मक वस्तुओं के संग्रह में रुचिशील रहेंगी।

सप्तम भाव में शनि के प्रभाव से आपके विवाह में विलम्ब होगा तथा विवाह पूर्व वार्ताओं में भी व्यवधान आएंगे आपका विवाह विज्ञापन के माध्यम से होगा परन्तु शनि के प्रभाव से आप प्रेम या अंतर्जातीय विवाह भी कर सकते हैं। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्य रूप से सुखी रहेगा तथा आपस में प्रेम तथा सहयोग की भावना होगी सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप आपसी सहमति तथा सहयोग से सम्पन्न करेंगे। परन्तु शनि के प्रभाव से पत्नी के स्वाभाविक उग्रता से आपको परेशानी की अनुभूति हो सकती है अतः ऐसे समय में शांति एवं बुद्धिमता का व्यवहार करना चाहिए।

आपका विवाह किसी समृद्ध एवं धनवान परिवार से होगा तथा सामाजिक रूप से भी उनकी प्रतिष्ठा रहेगी। सास ससुर से आपके संबंधों में औपचारिकता बनी रहेगी एवं समय समय पर एक दूसरे को सहयोग तथा सलाह देते रहेंगे। आप भी उनको पूर्ण महत्व देंगे जिससे एक दूसरे के प्रति विश्वास का भाव रहेगा।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का विशेष सेवा भाव नहीं रहेगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित देखभाल नहीं करेंगी। साथ ही तेजस्वी स्वभाव से ननद एवं देवर भी उनको यथोचित मान सम्मान एवं सहयोग नहीं देंगे।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यों में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल नहीं होगी तथा इसमें आपको लाभ की अपेक्षा हानि होगी एवं आपस में विश्वसनीयता भी नहीं रहेगी अतः

साझेदारी की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।



Pulak Sagarm - Hastrekha, Jyotish & Vastu

T - 13, Cosmo Tower, Hanuman Chauraha
Jankganj, Gwalior pin code 474001

9425187186, 9302614644
Astrodr.hcjain@gmail.com

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। मिथुन राशि वायु तत्व प्रधान है। अतः इनके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की इसमें न्यूनता होगी। साथ ही आप किसी स्वतंत्र कार्य करने के इच्छुक होंगे तथा इसमें सामयिक परिवर्तन भी करेंगे जिससे वांछित लाभ के प्रबल योग बनेंगे।

आपके लिए आजीविका संबंधी क्षेत्र शिक्षक या व्यख्याता, अनुष्ठान कार्य, धर्मोपदेशक प्रोफेसर, वकील, न्यायधीश, बैंक अधिकारी, शेयर ब्रोकर, सरकारी विभाग में सचिव, सलाहकार तथा प्रशासनिक क्षेत्र उत्तम एवं अनुकूल रहेंगे। इन क्षेत्रों में कार्य करने से आपको वांछित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति होगी तथा अनावश्यक समस्याओं एवं व्यवधानों से सुरक्षित रहेंगे। अतः यदि आप आजीविका क्षेत्र में वांछित सफलता तथा प्रसिद्धि प्राप्त करना चाहते हैं तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही अपनी आजीविका का चयन करना चाहिए।

व्यापारिक क्षेत्र में आपके लिए सुवर्ण आदि धातु व्यापार, शेयर क्रय विक्रय का कार्य, वित्तीय संस्था द्वारा, ब्याज द्वारा आप वांछित लाभ एवं धन अर्जित करने में समर्थ होंगे। इसके साथ ही कम्पनी के स्वामित्व, वकील का स्वतंत्र व्यवसाय तथा किसी संस्था के स्वामित्व से भी आपको इच्छित लाभ एवं धन की प्राप्ति होगी। अतः यदि आप व्यापारिक क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता बिना किसी समस्याओं एवं व्यवधानों के प्राप्त करना चाहते हैं तो उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का प्रारंभ करना चाहिए।

जीवन में आपको इच्छित मान प्रतिष्ठा एवं सम्मान की प्राप्ति होगी तथा किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को अर्जित करने में भी सफल होंगे। समाज में आप एक प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सभी लोग आपको वांछित आदर प्रदान करेंगे। साथ ही समाज में आपकी प्रसिद्धि भी दूर दूर तक व्याप्त होगी। इसके अतिरिक्त आप किसी सामाजिक या शैक्षणिक संस्था में किसी सम्मानित पदाधिकारी के रूप में भी कार्य कर सकते हैं। इससे आपकी प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा मानसिक सन्तुष्टि मिलेगी।

आपके पिता जी शिक्षित विद्वान एवं प्रभावशाली व्यक्ति होंगे तथा सामाजिक जनों के मध्य उनका पूर्ण आदर रहेगा एवं लोगों को वे अपना सहयोग प्रदान करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके प्रति उनका पूर्ण वात्सल्य का भाव होगा तथा शिक्षा का उच्चस्तर पर समुचित प्रबंध करेंगे। साथ ही कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता में उनका प्रमुख योगदान होगा तथा इससे आपके प्रभाव में वृद्धि होगी। आप भी अपने बुद्धिमतापूर्ण उत्तम कार्य कलापों से पिता के मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। आपके आपसी संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य एक दूसरे की सलाह एवं सहयोग से सम्पन्न करेंगे साथ ही सैद्धान्तिक तथा वैचारिक समानता भी विद्यमान होगी जिससे आप सुख पूर्वक अपना जीवन यापन करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि छठे भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु सप्तम भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि सप्तम भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि छठे भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि के गुरुनवम भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि दशम भाव में प्रवेश करेगी और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि एकादश भाव में गोचर करेगी और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि दशम भाव में आ जाएगी।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में आपको कार्य व्यवसाय में सफलता प्राप्त होगी। अपने भाग्य के द्वारा व्यवसाय में उन्नति करेंगे। गुरुएवं शनि ग्रह अनुकूल स्थान में होना चौमुखी विकास के संकेत हैं। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा।

मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का पदोन्नति के साथ इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है। भूमि से सम्बन्धित कार्य करने वाले व्यक्तियों को लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष उत्तम फलदायक रहेगा। व्यापारिक अनुकूलता होने के कारण इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। वर्षारम्भ में आप अपने भौतिक सुख सुविधाओं पर भी खर्च करेंगे।

मई के बाद चतुर्थ स्थान पर गुरुएवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन के साथ रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की भी प्राप्ति होगी। परिवार के सदस्यों एवं रिश्तेदारों के यहां मांगलिक कार्यों में आपके धन का व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में अधिक व्यस्तता के कारण परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे। आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। तृतीय स्थान पर गुरुग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी समाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

मई के बाद पारिवारिक रूप से समय और भी अनुकूल हो रहा है। आप के परिवार में परस्पर सहयोग एवं भावनात्मक प्रेम में वृद्धि होगी। परिवार के सभी सदस्यों का सहयोग प्राप्त होगा और परिवार के प्रति आपका आकर्षण भी बढ़ेगा। पिता के लिए यह समय काफी अच्छा रहेगा। मातुल पक्ष के साथ आपके संबंध मधुर होंगे।

संतान

पंचम स्थान पर गुरुके दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति होगी। आपके बच्चे अपने भाग्य व परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे।

यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो विवाह हो जाएगा। अप्रैल के बाद आपके बच्चे उन्नति करेंगे। दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा रहेगा। नवमस्थ गुरुकी पंचम दृष्टि लग्न पर होगी उसके प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता की प्राप्ति व कार्य क्षमताओं में वृद्धि के संकेत हैं। मानसिक शांति, प्रसन्नता एवं सकारात्मक सोच में वृद्धि होगी, जिससे स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद सप्तम स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उस समय स्वास्थ्य संबंधी गतिविधियों के प्रति ध्यान देना आवश्यक होगा। स्वस्थ शरीर के लिए अनुशासित दिनचर्या व उचित खान-पान ग्रहण करें साथ ही व्यायाम करना भी लाभदायक होगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान पर गुरुग्रह के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थी मनोनुकूल उपलब्धि प्राप्त करेंगे।

मई के बाद राहु ग्रह का गोचर छठे स्थान में होगा उस समय प्रतियोगिता परीक्षा की तैयारी करने वाले जातकों को सफलता प्राप्त होगी एवं नौकरी भी मिल सकती है। तकनीकी शिक्षा या व्यवसायिक शिक्षा के लिए भी यह समय श्रेष्ठतम रहेगा।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारंभ में गुरुग्रह के प्रभाव से छोटी-मोटी यात्राओं के साथ साथ आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। ये यात्राएं आपके लिए उन्नतिकारक सिद्ध हो सकती हैं। इन यात्राओं के दौरान आपकी किसी के साथ मित्रता भी हो सकती है।

14 मई के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों का मानोनुकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा। अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपने जन्मस्थल की यात्रा हो सकती है या पूरे परिवार साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का आनन्द उठाएं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारम्भ में नवमस्थ गुरुके कारण आप कोई विशेष पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान संपन्न करेंगे। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप योग, ध्यान, एवं अपने गुरुके द्वारा दिये गये मन्त्रों का पाठ करेंगे।

- नित्य स्नानादि के निवृत होकर सूर्य को अर्घ्य दें।
- गणेशजी के मन्त्र का पाठ का करें एवं नित्य प्राणायाम करें।
- एक नारियल अपने सिर से सात बार घुमाकर बहते हुए पानी में बहा दें।



वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु षष्ठ भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशिमें पंचम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि केगुरु दशम भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि मेंएकादश भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशिमें द्वादश भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा परिणाम देने वाला रहेगा। इस वर्ष आप अपने कार्यक्षेत्र में सफलता प्राप्त करेंगे। किसी अनुभवी व्यक्ति से मिलकर व्यापार में उन्नति के लिए कोई नई योजना बनाएंगे। दशमस्थ गुरु के प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों की पदोन्नतिहो सकती है या इच्छित स्थान पर स्थानान्तरण भी हो सकता है।

02 जून के बाद सप्तम स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपको कार्य व्यवसाय में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा। उच्च अधिकारियों व वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आप अपने व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करेंगे। आपकोजीवनसाथी का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो उसमें इच्छित लाभ प्राप्त होगा और अपने साझेदार से संतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। द्वितीय एवं चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से भूमि, भवन, वाहन, रत्न, आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। धनागम तो होता रहेगा। आप अपने भौतिक सुख सुविधाओं पर अधिक खर्च करेंगे।

02 जून के बाद एकादश स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकारुका हुआ धन मिल सकता है साथ ही आपके धनागम में वृद्धि होगी जिससे आप इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आप अपनी संचित पूंजी बढ़ाने के लिए निवेश भी करेंगे। भाई-बहन या पुत्र के विवाह के अवसर पर धन खर्च हो सकता है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। चतुर्थ स्थान पर गुरु एवं शनिग्रह के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपके परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको माता पिता सहित पूरे परिवार का सहयोग प्राप्त होगा।

02 जून के बाद आपको प्रेम प्रसंगों में भी सफलता प्राप्त होगी। यदि आप अविवाहित हैं तो विवाह हो जाएगा। यदि आप विवाहित हैं तो आपके जीवनसाथी के साथ सम्बन्ध मधुर होंगे। तृतीय स्थान में गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप सामाजिक कल्याण के

लिए कुछ विशेष कार्य संपन्न करेंगे।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे अपने परिश्रम के बल पर आगे बढ़ेंगे। वे अपनी बौद्धिक शक्ति एवं कर्म के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु के दृष्टि प्रभाव से नवविवाहित व्यक्तियों को संतान रत्न की प्राप्ति हो सकती है।

प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी अच्छी प्रगति होने के शुभ योग बने हैं। यदि आपका बच्चा विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। 31 अक्टूबर के बाद समय कुछ प्रभावित हो सकता है। उस समय उनके स्वास्थ्य पर ध्यान देने की जरूरत होगी।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। मानसिक रूप से आप सन्तुष्ट नहीं रहेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में लग्न स्थान पर शनि के दृष्टि प्रभाव से मौसमजनित बीमारियों से परेशानी हो सकती है। आलस्य, मानसिक चिंता इत्यादि छोटी-मोटी परेशानियां होती रहेंगी परन्तु गुरु के गोचरोपरान्त सब कुछ अनुकूल हो जाएगा।

02 जून के बाद गुरु का गोचर शुभ स्थान में होने से आपके स्वास्थ्य में सुधार होना शुरू हो जाएगा। आप अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शुद्ध एवं शाकाहारी भोजन ही करेंगे। संतुलित आहार के साथ साथ नियमित व्यायाम भी करते रहेंगे। 31 अक्टूबर के बाद आपको अपने स्वास्थ्य पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता होगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष बहुत अच्छा रहेगा। छठे स्थान के राहु आपको प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता दिलाएंगे। जो व्यक्ति नौकरी की तालाश में हैं उनको इस वर्ष नौकरी मिल जाएगी।

02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से विद्यार्थियों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी और वे अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा है। तकनीकी शिक्षा के लिए भी वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा।

यात्रा-तबादला

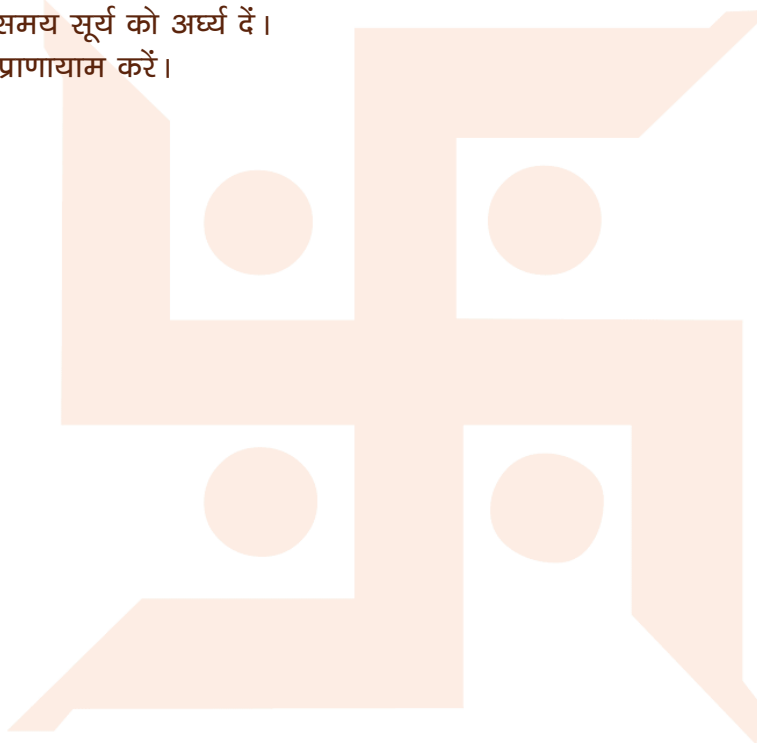
यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। नवम स्थान पर शनि ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप लम्बी यात्राएं करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपकी जन्म स्थल की यात्रा होगी। परिजनों साथ दर्शनीय स्थलों की यात्रा का भी आनन्द प्राप्त करेंगे।

मई के बाद छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। द्वादश स्थान पर राहु एवं केतु ग्रह के प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा भी होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप पूजा पाठ के लिए अधिक समय नहीं निकाल पाएंगे। 02 जून के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर ईश्वर के प्रति श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा। आप निःस्वार्थभाव से भगवान की पूजा व सत्कर्म करेंगे। 31 अक्टूबर के बाद दान पुण्य अधिक करेंगे।

- श्रीयन्त्र घर में स्थापित करें और नित्य उसके सामने देशी घी का दीपक जलाएं। जिससे आपकी आर्थिक उन्नति व समाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।
- सूर्योदय के समय सूर्य को अर्घ्य दें।
- प्रत्येक दिन प्राणायाम करें।



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं सप्तम भाव में आजाएंगे। मकर राशि के राहु इस वर्ष पंचम भाव में रहेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं एकादश भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में गोचर करेंगे, और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं द्वादश भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्यतः उत्तम रहेगा। आप कार्य व्यवसाय में उन्नति करेंगे। एकादशस्थ गुरु आपको सफलता के लक्ष्य तक अवश्य पहुंचाएंगे। बड़े अधिकारियों या अनुभवी लोगों का सहयोग मिलेगा, जिसका लाभ उठा कर आप व्यापार में उन्नति करेंगे। यदि आप किसी के साथ मिलकर कार्य कर रहे हैं, तो बहुत ज्यादा सफलता नहीं मिलेगी। चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वालों का स्थान परिवर्तन हो सकता है।

जून के बाद आपका समय प्रभावित हो रहा है। उस समय आपको धोखा या व्यापार में हानि हो सकती है। गुप्त शत्रु व विरोधी आपके कार्यों में रुकावटें उत्पन्न करेंगे। सकारात्मक सोच व आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ें क्योंकि वर्षान्त में शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर एक साथ अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको अपने व्यापार व कार्यक्षेत्र में बहुत अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम रहेगा। एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से धनागम में निरंतरता बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ करने में आपके भाइयों का मुख्य योगदान होगा। कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। फंसा हुआ या रुका हुआ धन मिलने की सम्भावना है, परन्तु गुरु ग्रह के गोचर के बाद समय प्रभावित हो सकता है।

जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है। अतः किसी प्रकार के जोखिम भरे कार्यों में धन निवेश न करें। लेन देन के मामले में हमेशा सावधान रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से अनुकूल हो रहा है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में अधिक व्यस्तता के कारण आप अपने परिजनों को अधिक समय नहीं दे पाएंगे परन्तु परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। भाइयों का सहयोग मिलता रहेगा। सामाजिक पद व प्रतिष्ठा में वृद्धि

होगी। सप्तमस्थ शनि आपकी पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित कर सकते हैं।

जून के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। उस समय परिवार में किसी व्यक्ति के साथ वैचारिक मतभेद हो सकता है। एक दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न होगी। सहन शक्ति को बढ़ाएं और अपने बौद्धिक शक्ति के अनुसार निर्णय लें।

संतान

संतान की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल रहेगा। पंचम स्थान परगुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपके बच्चों को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है तथा बच्चों की उन्नति में अवरोध पैदा होगा।

जून के बाद पंचमस्थ राहु के प्रभाव से संतान संबंधित चिंताएं बढ़ सकती हैं। आपके बच्चे को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है, जिससे फलस्वरूप उसकी शिक्षा-दीक्षा भी प्रभावित हो सकती है। इस समयान्तराल में गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद आपके दूसरी संतान के लिए समय शुभ हो रहा है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। लग्न स्थान पर शनि एवं राहु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपको स्वास्थ्य संबंधित परेशानी उत्पन्न हो सकती है। अचानक स्वास्थ्य खराब हो सकता है, परन्तु एकादशस्थ गुरु के प्रभाव से आप जल्दी ही स्वस्थ भी हो जाएंगे।

26 जून के बाद समय काफी प्रतिकूल हो रहा है। उस समय मौसम जनित बीमारी, दुर्घटना या किसी प्रकार के शारीरिक कष्ट का सामना करना पड़ सकता है। द्वादशस्थ गुरु के जल तत्व राशि में होने के कारण कफ रोग या मौसम सम्बन्धित बीमारियां घेर सकती हैं। ऐसे में स्वास्थ्य का ख्याल रखना जरूरी होगा। सुबह-सुबह व्यायाम करना या योगा करना आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा। 21 नवम्बर के बाद स्वास्थ्य अनुकूल होना शुरू हो जाएगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

वर्ष का पूर्वार्द्ध विद्यार्थियों के लिए अनुकूल नहीं रहेगा। पंचमस्थ राहु के प्रभाव से आपकी शिक्षा में रुकावट आ सकती है। आलस्य की भावना आपकी शिक्षा में व्यवधान डाल सकती है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है।

26 जून के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। उस समय प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्त करने के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगार जातकों को अभी और इंतजार करना पड़ सकता है। 26 नवम्बर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय काफी अच्छा हो जाएगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में छोटी यात्राएं तो होती रहेंगी, परन्तु 26 जून के बाद द्वादश स्थान के गुरु आप को विदेश यात्रा भी करा सकते हैं।

चतुर्थ स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से अपने घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्मभूमि की यात्रा होगी।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध अच्छा रहेगा। एकादशस्थ गुरु ग्रह के प्रभाव से आपका मन पूजा-पाठ के प्रति ज्यादा आकर्षित रहेगा। परमात्मा के भक्ति या मन्त्र पाठ में रुचि लेंगे। सप्तमस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप धर्मपत्नी के साथ कोई विशेष पूजा-पाठ करेंगे। 26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर द्वादश स्थान में होने से दान-पुण्य की मनोभावना उत्पन्न होगी।

- द्विज, देव, ब्राह्मण, बुजुर्ग, गुरु व मंदिर के पूजारी की सेवा, सुश्रूषा करें।
- पीली दाल, केला व बेसन की मिठाई मंदिर में दान करें एवं गुरुवार का व्रत करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु या काला कम्बल दान करें।
- गरीबों को भोजन कराएं।

वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि सप्तम भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं अष्टम भाव में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरुआत में मकर राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु लग्न स्थान में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं द्वादश भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष के प्रारम्भ में सप्तम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपको व्यापार में बहुत लाभ मिलेगा। वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। फरवरी के बाद आपके कार्य व्यवसाय में व्यवधान आ सकता है। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं। कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। व्यापार व कार्य क्षेत्र में सफलता मिलनी शुरु हो जाएगी। भाग्य अनुकूल होने के कारण आपको कार्यों में सफलता मिल सकती है। चतुर्थस्थ राहु के कारण नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण हो सकता है। यह स्थानान्तरण आपके मनोनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धन संपत्ति

फरवरी के बाद आर्थिक उन्नति के लिए समय उत्तम नहीं रहेगा। कुछ ऐसे खर्च आ सकते हैं जिससे आपको आर्थिक हानि हो सकती है। आय के सारे मार्ग प्रभावित हो सकते हैं। इन सब के बावजूद आपका पैसा भी खो सकता है। किसी को उधान पैसा न दें। बच्चों के स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है।

24 जुलाई के बाद समय कुछ अच्छा हो रहा है। रुका हुआ धन वापस मिल सकता है जिससे आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु होगा। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी या मित्रों से धन लाभ होगा। अपने व्यापार को और आगे बढ़ाने में भी धन व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण भौतिक सुख-सुविधाओं पर भी आपका खर्च होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में पारिवारिक माहौल उत्तम रहेगा परन्तु फरवरी के बाद गुरु एवं शनि ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने से पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है। ससुराल पक्ष के लोगों के साथ आपके वैचारिक मतभेद होंगे। परिवार में एक-दूसरे के प्रति वैमनस्य की भावना उत्पन्न हो सकती है।

24 जुलाई के बाद समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके परिवार में पुत्रादि का

विवाह या कोई मांगलिक कार्य संपन्न होगा जिसमें आपकी अहम भूमिका होगी। सप्तम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ आपके सम्बन्ध मधुर होंगे। सामाजिक पद-प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष उत्तम रहेगा।

संतान

पंचमस्थ राहु के प्रभाव से वर्ष का प्रारम्भ संतान के लिए अच्छा नहीं है। वर्ष के प्रारम्भ से ही संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। आपके बच्चों का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा जिससे उनकी शिक्षा भी प्रभावित हो सकती है। स्वास्थ्य संबंधित कोई लापरवाही न करें। गर्भवती स्त्रियों का गर्भपात हो सकता है।

24 जुलाई के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से समय काफी अनुकूल हो रहा है। आपके बच्चे की शिक्षा के क्षेत्र में रुचि बढ़ेगी। अच्छे शैक्षणिक संस्थान में उसका प्रवेश हो जाएगा। आपके दूसरे बच्चे के लिए भी समय बहुत अच्छा है। यदि विवाह योग्य है तो विवाह भी हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। लग्नस्थ गुरु पर शनि की दृष्टि प्रभाव से शारीरिक आरोग्यता में वृद्धि होगी जिससे रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी। फरवरी के बाद समय प्रतिकूल हो रहा है। द्वादशस्थ गुरु एवं अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से स्वास्थ्य में अचानक उतार चढ़ाव की स्थिति बन सकती है। कफ, मधुमेह, पेट संबंधित एवं मौसमजनित बीमारियों के कारण ज्यादा परेशान हो सकते हैं। कभी कभी बीमारी नहीं होने के बावजूद बीमार जैसा अनुभव होगा।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचरीय प्रभाव लग्न स्थान में होने से स्वास्थ्य में सुधार आना शुरू हो जाएगा। अच्छे स्वास्थ्य के लिए खान-पान एवं दिनचर्या को सुधारें। आपकी धर्मपत्नी आपकी सेहत का पूरा ध्यान रखेगी।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। तकनीकी शिक्षा या व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को सफलता मिलेगी। फरवरी के बाद प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को सफलता प्राप्ति के लिए अथक प्रयास करना पड़ेगा।

24 जुलाई के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा हो रहा है। आप पढाई लिखाई में आगे रहेंगे। यदि आप उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहते हैं तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में आपका प्रवेश हो सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष काफी अच्छा है। फरवरी के बाद द्वादशस्थ गुरु विदेश यात्रा के अच्छे योग बना रहे हैं। जलीय क्षेत्र की यात्रा के प्रबल योग बन रहे हैं।

24 जुलाई के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। यात्रा के दौरान या वाहन चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है क्योंकि अष्टम स्थान में शनि का गोचर यात्रा में व्यवधान उत्पन्न करता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्षारंभ में लग्न, पंचम व नवम इन तीनों त्रिकोण भावों पर गुरु के गोचरीय प्रभाव के चलते आप ईश्वर भक्ति, योग, तीर्थाटन तथा गुरु भक्ति या गुरु दीक्षा लेने जैसी गतिविधियों में रुचि लेने के अतिरिक्त पूजा-पाठ, मंत्र जाप तथा यज्ञ आदि कर्म अधिक करेंगे। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के गोचरीय प्रभाव से तन्त्र के प्रति आपका आकर्षण ज्यादा रहेगा।

- माता-पिता, गुरु, साधू, संन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें।



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि अष्टम भाव में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं अष्टम भाव में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु चतुर्थ भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं लग्न भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं द्वितीय भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं लग्न भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष की शुरुआत कार्य व्यवसाय के लिए सामान्य रहेगी। अष्टम स्थान के शनि व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थिति बना रहे हैं। आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचान में कठिनाईयों का अनुभव करेंगे। आपके कार्यों में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए अपनी बौद्धिक क्षमता के अनुसार कार्य करते रहें।

25 अगस्त से समय काफी अनुकूल हो रहा है। कार्य व्यवसाय में आपका भाग्य साथ देगा। लोगों का सहयोग प्राप्त होगा। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण होगा।

धन संपत्ति

वर्ष का प्रारम्भ आर्थिक उन्नति के साथ होगा। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से रत्न आभूषण इत्यादि वस्तुओं की प्राप्ति होगी। संचित धन में भी वृद्धि होगी। आय के स्रोतों में निरंतरता बनी रहेगी। मांगलिक कार्यों में भी आप व्यय करेंगे। चतुर्थस्थ राहु के कारण माता या आपके स्वास्थ्य पर भी व्यय हो सकता है। अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से पैतृक संपत्ति या स्थिर धन का लाभ हो सकता है।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक समय काफी अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल आपके रुके हुए पैसे या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। पुराने चले आ रहे कर्जे इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है। सितम्बर के बाद कोई बड़ा निवेश न करें। विशेष कर जमीन जायदाद में। नहीं तो आपका पैसा फंस सकता है।

घर-परिवार, समाज

वर्षारम्भ में परिवार में सदस्य संख्या में वृद्धि होगी। आपके परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। परिवार में एक-दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना उत्पन्न होगी जिससे आपस में भावनात्मक लगाव बढ़ेगा। 29 मार्च से पारिवारिक माहौल बिगड़ सकता है। परिवार में एक-दूसरे के साथ मानसिक मतभेद उत्पन्न होता रहेगा। अष्टमस्थ शनि के प्रभाव से आपके ससुराल पक्ष के लोगों के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं।

25 अगस्त के बाद पारिवारिक वातावरण फिर से अनुकूल हो जाएगा और आपको परिवार का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थ स्थान का राहु माता के स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। अतः उनके खान पान पर ध्यान दें। आप सामाजिक गतिविधियों में कम भाग लेंगे।

संतान

वर्षारम्भ से आप के बच्चों की उन्नति होगी। शिक्षा के प्रति उनकी रुचि बढ़ेगी। 29 मार्च के बाद आपके दूसरे बच्चे के लिए समय बहुत अच्छा हो रहा है। यदि विवाह योग्य है तो उसका विवाह भी हो सकता है। पंचम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि भर्गाधान के लिए उत्तम योग बना रही है। नवविवाहित महिलाओं के लिए संतानोत्पत्ति का सुन्दर समय चल रहा है।

25 अगस्त के बाद संतान को उन्नति के अवसर मिलेंगे। मान-सम्मान प्राप्त करेंगे। संतान के साथ प्रेम व समन्वय में वृद्धि होगी। आपके घरेलू वातावरण में भी सुधार होगा।

स्वास्थ्य

वर्षारम्भ में अष्टमस्थ शनि एवं लग्नस्थ मंगल के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहेगा। मौसमजनित बीमारियों से आपका स्वास्थ्य प्रभावित होता रहेगा। 29 मार्च के बाद लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके स्वास्थ्य में काफी सुधार आएगा। आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट रहेंगे। प्रत्येक कार्य को आप सकारात्मक रूप से करेंगे। रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी। मानसिक शान्ति एवं शारीरिक आरोग्यता प्राप्त होगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

05 अक्टूबर से फिर से स्वास्थ्य संबंधित परेशानी हो सकती है परन्तु आप शीघ्र ही अच्छे हो जाएंगे और अपने स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए नियमित व्यायाम करेंगे। शुद्ध शाकाहारी भोजन ही ग्रहण करेंगे। जिससे आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

विद्यार्थियों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। करियर में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार परिश्रम करने की आवश्यकता है। 29 मार्च के बाद व्यावसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय उत्तम रहेगा।

25 अगस्त से 05 अक्टूबर तक प्रतियोगिता परीक्षार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा। इस समय के अंतराल में आपको सफलता मिल सकता है। आपके लिए रोजगार के नये-नये अवसर भी मिलेंगे। जिसका उचित लाभ उठाकर आप अपने करियर में सफल होंगे।

यात्रा-तबादला

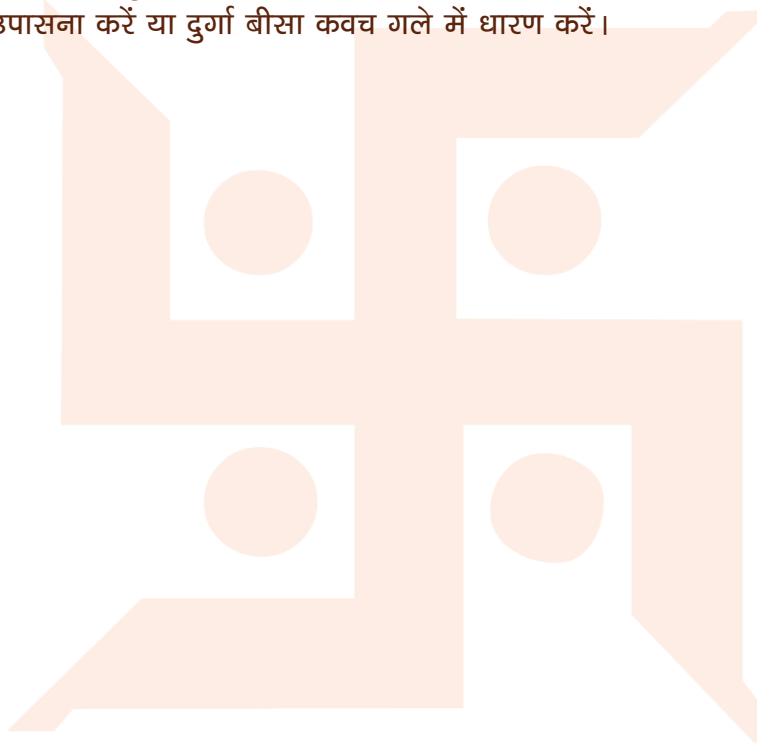
द्वादश स्थान पर राहु की दृष्टि प्रभाव से वर्षारम्भ में विदेश यात्रा हो सकते हैं। 29 मार्च के बाद नवम पर गुरु की दृष्टि के कारण आपके जन्म स्थल से दूर की लम्ब यात्रा हो सकती है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों का प्रतिकूल स्थान पर स्थानान्तरण हो सकता है।

25 अगस्त से आपकी छोटी-मोटी यात्राएं होती रहेंगी। 05 अक्टूबर के बाद आप जलीय क्षेत्रों की यात्रा भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्यों के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। 29 मार्च के बाद नवम स्थान पर गुरु की दृष्टि प्रभाव से धार्मिक कार्यों के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी जिसके फलस्वरूप आप पूजा, पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान अधिक करेंगे। आप गुरु मन्त्र लेकर उसकी साधना कर सकते हैं। 05 अक्टूबर के बाद नवमस्थ शनि के प्रभाव से धार्मिक यात्रा भी करेंगे। आपकी रुचि धार्मिक कार्यों के प्रति और बढ़ जाएगी।

- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें। शनि मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक मंगलवार को हनुमानजी को चोला चढ़ाएं।
- दुर्गाजी की उपासना करें या दुर्गा बीसा कवच गले में धारण करें।



दशा विश्लेषण

महादशा :- सूर्य
(25/08/2023 - 24/08/2029)

सूर्य की महादशा 25/08/2023 को आरम्भ होगी 6 वर्षों के बाद 24/08/2029 को समाप्त होगी। आपकी जन्मकुण्डली में सूर्य षष्ठम भाव में स्थित है। सूर्य स्वास्थ्य, ओज, साहस, पराक्रम और सामर्थ्य का प्रतिनिधित्व करता है जबकि षष्ठम भाव स्वास्थ्य, सेवा, मता की ओर के सम्बन्धों, प्रतिद्वन्द्वियों और ऋण का सूचक है। अतः इस दशा में आपको प्रतिद्वन्द्वियों पर विजय, ऋण से मुक्ति, उत्तम स्वास्थ्य तथा अच्छी नौकरी की प्राप्ति होगी।

स्वास्थ्य :

इस दशा में आपका स्वास्थ्य अति उत्तम रहेगा। आपको उत्तम ओजस्विता और उत्साह की प्राप्ति होगी। इस दशा में आप सभी बड़े रोगों से मुक्त होंगे। आप उत्तम स्वास्थ्य लाभ करेंगे। अपने उत्तम स्वास्थ्य को अक्षुण्ण रखने के लिये आपको सात्विक तथा सन्तुलित भोजन करना चाहिए। आपको हर क्षेत्र में अतिशयता का परित्याग करना चाहिए। आपको सरदर्द, प्रदाह आदि हो सकते हैं। आपकी उपेक्षा के कारण आँख तथा हृदय से संबंधित रोग हो सकते हैं।

अर्थ :

इस दशा में आप नौकरी से लाभ प्राप्त कर सकते हैं। आपको मुकदमों में सफलता मिलेगी। आप ऋण से मुक्त होंगे। साझेदारों से धन की प्राप्ति का संकेत भी है। आप स्वभाव से उदार हैं, आपके लिये धन की रक्षा करना कठिन होगा। मातृ-पक्ष से भी धन की प्राप्ति हो सकती है। अगर फिजूलखर्ची पर नियंत्रण करें तो आपका बैंक बैलेंस सुदृढ़ होगा।

व्यवसाय :

आपको प्रतिद्वन्द्वियों और प्रतिस्पर्धियों पर विजय मिलेगी। आपके लिये नौकरी उत्तम है। स्वतंत्र व्यवसाय कम लाभदायक होगा। आप एक अच्छे नेता हैं और किसी संस्था, निगम या बड़े संगठन के प्रधान हो सकते हैं। सैन्य अथवा राजनीतिक सेवा, प्रशासकीय कार्य, तकनीकी तथा वैज्ञानिक सेवाएं आपकी जीवन-वृत्ति के लिये उपयुक्त हैं। रत्न, पत्थर, संगमरमर, अन्न तथा उपकरणों से सम्बन्धित व्यापार लाभदायक हो सकता है। क्रीड़ा सामग्री के व्यवसायियों को लाभ होगा। नौकरीपेशा लोगों के लिये यह दशा उत्तम होगी। इस दशा के दौरान मान-सम्मान तथा आमदनी में वृद्धि होगी और इच्छाधिकारियों का अनुग्रह प्राप्त होगा। व्यवसायियों व्यापारियों का भाग्योदय होगा, आमदनी अच्छी होगी और रोजगार के अवसरों में वृद्धि होगी। लाभ के संकेत हैं। जीवन-वृत्ति, व्यवसाय और व्यापार में प्रगति के लिये यह दशा उत्तम है।

परिवार (कुटुम्ब) :

अगर आप अपनी हठधर्मिता और आक्रामकता पर नियंत्रण रखें तो परिवार में आपके सम्बन्ध मधुर रहेंगे। बच्चों तथा जीवन साथी से मतभेद हो सकते हैं। धैर्य तथा सतर्कता

की आवश्यकता है। आपके छोटे भाई-बहनों की शिक्षा उत्तम होगी और उन्हें सुख और अचल सम्पत्ति की प्राप्ति होगी। अप्रत्याशित प्रगति होगी और अकस्मात लाभ प्राप्त होंगे।

शिक्षा :

राजनीति, नागरिकशास्त्र तथा जन कल्याण से सम्बन्धित योजनाओं में भी आपकी रुचि होगी।



अंतर्दशा :- सूर्य - राहु
(18/10/2024 - 12/09/2025)

आपके लिए सूर्य की महादशा 25/08/2023 को प्रारंभ हुई थी। इसमें चतुर्थ अंतर्दशा राहु की होगी। यह 18/10/2024 को प्रारंभ होकर 12/09/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु भौतिक सुख, दादा और तीर्थयात्रा का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। सुख-संपत्ति उत्तम होंगे। घर में उत्सव या विवाह हो सकता है। जीवनसाथी को धन और उच्चपद प्राप्त होंगे। पिता को निवेश से लाभ होगा। उन्हें आप से सुख मिलेगा। माता की तीर्थयात्रा होगी। भाई-बहनों को अर्थलाभ के अवसर मिलेंगे। उन्हें अचानक धन मिल सकता है। वे परिश्रम द्वारा आकांक्षाओं की पूर्ति करेंगे।

आपकी संतान को भौतिक सुख-साधन प्राप्त होंगे। उनकी रुचि ज्ञान-विज्ञान में होगी। आपको उनसे सुख मिलेगा। आपके शत्रु के क्रियाकलापों का भंडाफोड़ होगा। परिवर्तन आपके लिए लाभकारी हो सकता है। इससे सुख-साधन बढ़ेंगे। व्यापारियों को निर्यात और विदेश से लाभ होगा। परामर्शदाता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकते हैं।

आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। शत्रुओं पर विजय होगी। शरीर के ऊपरी भाग की भावनात्मक व्याधियों से बचें। अरिष्ट से बचने के लिए राहु मंत्र का जाप करें।

ॐ रां राहवे नमः

अंतर्दशा :- सूर्य - गुरु
(12/09/2025 - 01/07/2026)

आपके लिए सूर्य की महादशा 25/08/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति की अंतर्दशा 9 मास 18 दिन की रहेगी। यह 12/09/2025 को प्रारंभ होकर 01/07/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति धन, संतान और धर्म का कारक है।

इस अवधि में आपको संतान से सुख मिलेगा। जीवन के सब सुख प्राप्त होंगे। समाज में सफलता मिलेगी और मनोरंजन के लिए समय बिताने से सुख मिलेगा। मंत्रसिद्धि में रुचि हो सकती है। आप परामर्शदाता के तौर पर कार्य कर सकते हैं। आपको विभिन्न माध्यमों से धन प्राप्त हो सकता है। लंबी यात्राएं हो सकती हैं। भाग्य साथ देगा, दर्शनशास्त्र और अन्य संबंधित विषयों में रुचि रहेगी। समृद्धि बढ़ेगी।

जीवनसाथी या व्यापार में साझेदार की आय बढ़ेगी। आपके पिता को धन और सुविधाएं प्राप्त होंगी। माता को धनलाभ और पारिवारिक प्रसन्नता प्राप्त होंगे। भाई-बहनों को वाक्शक्ति, कला, लघु यात्राओं से लाभ होगा; उनकी किसी से भागीदारी हो सकती है। आपकी संतान शिक्षा में उन्नति करेगी; उन्हें धनलाभ होगा, प्रसन्न रहेंगे और स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो खर्च बढ़ सकते हैं। लाभकारी तबादला हो सकता है और सेवानिवृत्ति से धन मिल सकता है। परामर्शदाताओं के कार्यक्षेत्र में परिवर्तन हो सकता है,

धनलाभ होगा। व्यापारी भविष्य के लिए अचल संपत्ति का निर्माण करेंगे।

पाचनतंत्र का ध्यान रखें, जिगर के रोगों ओर सुस्ती से बचें। दुखों से बचने के लिए विष्णु भगवान की आराधना करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - शनि
(01/07/2026 - 13/06/2027)

आपकी सूर्य की महादशा जारी है। इसमें छठी अंतर्दशा शनि की है जिसकी अवधि 11 मास 12 दिन है। आपके लिए यह 01/07/2026 को प्रारंभ होगी और 13/06/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि आयु, संन्यास और दार्शनिक स्वभाव का कारक है।

इस अवधि में आपको साझेदारी और अन्य व्यक्तियों से घनिष्ठ संबंधों से लाभ होगा। विवाह, अनुबंध एवं व्यापार से लाभ होगा। विदेश की यात्रा हो सकती है। मान-सम्मान बढ़ेगा। माता से प्रसन्नता मिलेगी। अचल संपत्ति और वाहन का योग है। पिता से संबंधों में सावधानी बरतें।

आपके जीवनसाथी को उत्तम धन, उच्च पद, स्वास्थ्य और घरेलू सुख प्राप्त होंगे। माता भी भाग्यशाली रहेंगी। भाई-बहन प्रगति करेंगे। आपकी संतान परिश्रम करेगी, आप से उनके संबंध मधुर होंगे, उनका जीवन भाग्यशाली और धन से परिपूर्ण रहेगा।

अगर आप सेवारत हैं तो लाभ होगा; वेतन में वृद्धि होगी। परामर्शदाता व्यस्त रहेंगे। व्यापारियों को बाधाओं का सामना करना पड़ेगा।

पेट के रोग, उदरशूल, थकान से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए भैरव के रूप में शिवजी की आराधना करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - बुध
(13/06/2027 - 18/04/2028)

आपकी सूर्य की महादशा 25/08/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा बुध की है जिसकी अवधि 10 मास 6 दिन रहेगी। यह 13/06/2027 को प्रारंभ होकर 18/04/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध बुद्धिमत्ता, शिक्षा, वाणी का कारक है।

इस अवधि में आपको सट्टेबाजी और निवेश से लाभ होगा। ललित कलाओं और कविता में रुचि रहेगी। आपको परामर्शदाता के रूप में कार्य करने का निमंत्रण मिल सकता है। आपकी अध्यात्म और वेदों में रुचि हो सकती है। घर में शिशु का जन्म हो सकता है। आपको प्रसिद्धि मिल सकती है। आपको खेलकूद, साहित्य, कला और मनोविज्ञान आदि में दिलचस्पी हो सकती है। आपकी चिंतनशक्ति और कल्पना प्रखर रहेंगी जिनसे आप नये विचारों का प्रतिपादन कर सकते हैं। आकांक्षाओं की पूर्ति होगी।

संतान से सुख मिलेगा। जीवनसाथी सा व्यापार में साझेदार का जीवन सुखी और सुविधापूर्ण होगा। आपके पिता की यात्राएं होंगी और धर्म में रुचि रहेगी। माता की आय में

वृद्धि होगी। भाई-बहनों को व्यापार में लाभ होगा। संतान को परीक्षा में सफलता मिलेगी और विभिन्न गतिविधियों में उत्साह बना रहेगा।

व्यापारियों के कार्यक्षेत्र में वृद्धि होगी। सेवारत जातकों का तबादला हो सकता है, खर्च बढ़ेंगे। परामर्शदाताओं के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकते हैं।

स्नायुतंत्र, मष्तिष्क के रोगों से बचाव करें। हरी वस्तुओं जैसे हरे वस्त्र, हरी दाल आदि का दान करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - केतु (18/04/2028 - 24/08/2028)

आपके लिए सूर्य की महादशा 25/08/2023 को प्रारंभ हुई थी। इसमें आठवीं अंतर्दशा केतु की है जिसकी अवधि 4 मास 6 दिन रहेगी। आपके लिए यह 18/04/2028 को आरंभ होकर 24/08/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी केतु संन्यास, मंत्रज्ञान और कष्टों का कारक है।

इस अवधि में व्यापार से धनागम होगा। साझेदारी लाभप्रद रहेगी। कार्य-व्यवसाय हेतु यात्राएं होंगी। विपरीत लिंग के व्यक्तियों से लाभ होगा। शत्रु और स्पर्धी आपको बदनाम करने की कोशिश कर सकते हैं।

दांपत्य जीवन में कुछ समस्या आ सकती है या जीवनसाथी किसी कार्य-व्यवसाय के कारण घर से दूर जा सकते हैं। आध्यात्मिक कार्यों में आपकी रुचि होगी और परोपकार की भावना में वृद्धि होगी।

जीवनसाथी को लाभ होगा, संपदा बढ़ेगी, वाहन सुख रहेगा। पिता का समय प्रसन्नता से बीतेगा। उन्हें सफलता, प्रोन्नति, भूमिप्राप्ति, उच्चाधिकारियों से लाभ का संकेत है। माता को अचल संपत्ति, रिश्तेदारों से मदद मिलेगी। भाई-बहनों को निवेश से लाभ होगा।

आपकी संतान को सहयोगियों से लाभ होगा। उन्हें नये मित्रों से पहचान बढ़ाने से पहले सतर्क रहना चाहिए।

अगर आप सेवारत हैं तो लाभ प्राप्त करेंगे, दूसरों से व्यवहार करते वक्त सावधान रहें। परामर्शदाताओं की व्यस्तता बढ़ेगी, प्रसिद्धि मिलेगी। व्यापारी शत्रुओं पर विजयी होंगे।

उत्सर्जन तंत्र और आंतों के रोगों से बचाव करें। शुभत्व में वृद्धि के लिए उड़द, सतनता, तिल और कस्तूरी का दान करें।

अंतर्दशा :- सूर्य - शुक्र (24/08/2028 - 24/08/2029)

सूर्य महादशा में शुक्र अंतर्दशा होगी।

इस अंतर्दशा की अवधि में आपको संतान से सुख मिलेगा। संतान का जन्म हो

महादशा :- चन्द्र
(24/08/2029 - 25/08/2039)

चंद्र महादशा की अवधि दस वर्ष है। आपकी कुण्डली में यह 24/08/2029 को आरंभ और 25/08/2039 को समाप्त होगी।

चन्द्र द्वादश भाव में अवस्थित है और उसे प्रबल कर रहा है। द्वादश भाव नुकसान और विघ्न, क्षति, और अपव्यय, कड़ी मजदूरी और धोखा, उदार दान, परिवार से अलगाव, छिपे दुश्मन, अस्पताल में भर्ती, छल-कपट, घोटाला, अपमान तथा गुप्त दुःख का सूचक है। अतः दस वर्षों की यह अवधि मिश्रित प्रतिक्रियाओं से भरी होगी जिसमें आप उत्थान-पतन दोनों की आशा कर सकते हैं।

स्वास्थ्य :

आपका जीवन सामान्य रहेगा, किन्तु, कुछ विकृति की सम्भावना है। आपकी आँखें इस दशा में कमजोर हो सकती हैं, अतः इनकी देखभाल करें। आपका मस्तिष्क संकुचित हो सकता है जिससे आपका जीवन अन्धकारमय हो जाएगा और आप अलग-थलग पड़ जाएंगे।

अर्थ और सम्पत्ति : अर्थ की दृष्टि से यह अवधि आपके लिए सामान्य रहेगी और चन्द्र की इस दशा के दौरान आप अपनी सम्पत्तियों व बैंक बैलेंस में वृद्धि करने की स्थिति में नहीं होंगे। जहाँ-तहाँ निवेश करने के प्रति सावधानी बरतें, इससे इस दशा में नुकसान हो सकता है।

व्यवसाय :

आप अपने व्यवसाय से सन्तुष्ट रहेंगे और व्यवसाय में परिवर्तन के लिए स्थान बदल सकते हैं। मार्गदर्शन प्राप्त करने तथा नये व्यवसाय आरम्भ के क्रम में आप कहीं दूर भी जा सकते हैं। अपने सभी सौदों में सावधानी बरतें क्योंकि आप जो भी नया व्यवसाय आरम्भ करेंगे उसमें नुकसान हो सकता है।

पारिवारिक जीवन :

आपके जीवन-साथी आपके सहायक होंगे और आप अपने पारिवारिक जीवन का भरपूर आनन्द उठाएंगे। आपका पारिवारिक जीवन सुखमय और सौहार्द्रपूर्ण होगा। आपके बच्चे सहायक और आज्ञाकारी होंगे और परिवार में स्वस्थ वातावरण का निर्माण करेंगे। किन्तु इस दशा में बीमारी तथा अन्य विषयों पर अत्यधिक व्यय होगा। आप धार्मिक कार्यों पर भी व्यय करेंगे।



**अंतर्दशा :- चन्द्र - चन्द्र
(24/08/2029 - 25/06/2030)**

चंद्र महादशा की अवधि 10 वर्ष रहेगी। आपके लिए यह 24/08/2029 को प्रारंभ होकर 25/08/2039 को समाप्त होगी। इस महादशा में चंद्र की अंतर्दशा की अवधि 10 मास रहेगी। आपके लिए यह 24/08/2029 को प्रारंभ होकर 25/06/2030 को समाप्त होगी।

चंद्रमा आपकी जन्मपत्रिका में द्वादश भाव में स्थित है। द्वादश भाव हानि, बाधाएं, धन के दुरुपयोग, धोखा, दान, परिवार से अलगाव, दुख, छुपे दुश्मन, कांड, गुप्त दुख, शैयासुख और विदेश में जीवनयापन का संकेतक है। इस अवधि में आप रहस्य विद्या के अध्ययन में रुचि लेंगे। मष्तिष्क विचलित रह सकता है। चंद्र मन का कारक है, अतः आप अत्याधिक संवेदनशील होने से बचें।

किसी कांड में फंसने पर धन का अपव्यय हो सकता है, अतः सावधानी आवश्यक है।

द्वादश में चंद्र की स्थिति अशुभ मानी जाती है। अतः चंद्र के वैदिक मंत्र के 11000 जाप करें। शाम को चंद्रोदय के समय चंद्रमा को चंद्र मंत्र का उच्चारण करते हुए कच्चा दूध अर्पित करें।